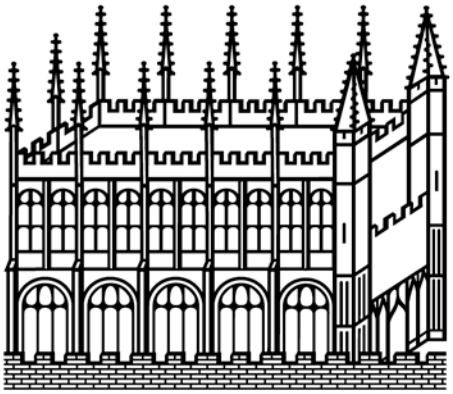


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

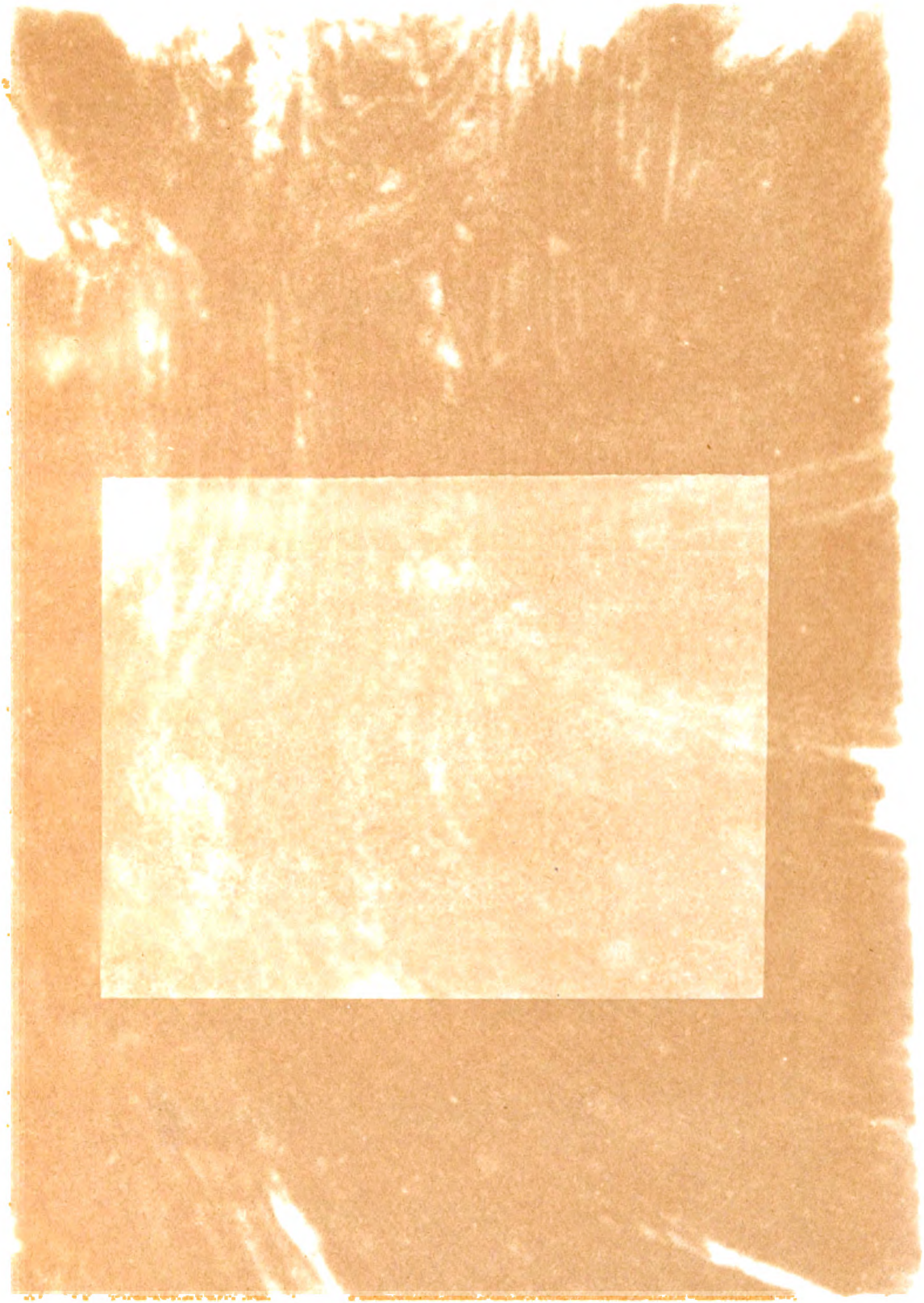


This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.C.42 Hindi misc. B 14

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.



Manohar-Kahānī.

Manohar Kahani

मनोहर कहानी

منوہر کہانی

जिसमें

सब एक सौ अलहिदः अलहिदः निहायत

दिल चस्प किस्सः दर्ज हैं

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई।

माहजनवरी सन १८८०ई०

पौष सं० १९३६

पहली बार १००० जिल्द छपी

क़ीमत फ़ी जिल्द

قیمت فی جلد

मनोहर कहानी

مشتمل کہانی

जिसमें

सब एक सौ अलहिदः अलहिदः निहायत

दिल चस्प किस्सः दर्ज हैं

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई।

माहजनवरी सन् १८८०ई०

पौष सं० १९३६

पहलीबार १००जिल्द छपी

कीमत फ़ी जिल्द
قیمت فی جلد

श्रीगणेशायनमः

मनोहर कहानियां सुगम बोली में

कहानी १

एक साहूकार पोतड़ों का रज्जा समयके फेर में पड़ अपना धन सब खोबैठा; और लगा निपट दुख पाने, और उपासा रहने. निदान उसके जीमें यह शोच आया कि जो मैं किसी महापुरुष या सिद्ध के पास जाऊं तो यह दुख मिटे; क्योंकि सुना भी है कि साध के दर्शन से व्याधि जाती है. यह विचार, चला चला एक जोगी के पास गया; यह उस से कुछ कहने न पाया, कि उसने अपने जोगसे इसका मनोरथ जान करके कहा, {दोहा} सुख दुख प्रति दिन संग है मेट सके नहिं कोय, जैसे छाया देह की न्यारी नेक न होय- यह उत्तम उत्तर पा, वह विचार धीरज धर अपने घर आया.

कहानी २

एक अंधा बैरागी काशी के बीच मनिकर्निका घाट पर बैठा गाहन में ही पेड़ रवा रहा था, कि देख कर किसी पंडित ने पूछा, सूरदासजी! यह क्या करते हो? बोला, महाराज! ही पेड़ रवाता हूं. कहा गाहन में? उत्तर दिया, बाबा! मेरे गुरु की दया से सही गाहन है. यह सुन पंडित हंसकर चुप हो रहा-

कहानी ३

कोई राजपूत बहुत अफीम खाता था; देवी उसे विदेश जाना पड़ा और किसी अड्डे में जाकर उतरा वहांके लोगोंने आकर इससे कहा, कि ठाकुर साहिब यहां चोरी बहुत होती है, आप चौकसी से रहियेगा. यह बात सुनकर रात को उसने जागकर काटी; पर यह बात जी में धर ली, कि चोरी बहुत होती है भोर होते ही घोड़े की पीठ लगा; एक नगर के बीच चला जाता था, कि एका एकी पीनक से चौंककर पुकारा, अरे रम चेहरा! अरे रम चेहरा! घोड़ा कहां; यह बोला, महाराज! घोड़े पै तो बैठे ही

जाते हो, और घोड़ा कैसा; कहा देखा इस बातकी कुछ चिंता नहीं, पर सावधान रहना अच्छा है.

कहानी ४

एक बनिया कहीं गया था, दो तीन दिन पीछे वहां से आया तो उसने अपने घर किवाड़ बंद पाया पुकारा, किवाड़ खोलियो भीतर से उसकी जोरू ने उत्तर दिया, कि खोलूंहूं बावा इसने सुनकर कहा, ऐ रांड क्या बकी है, वह बोली, मेरी आंख दुखती है. कहा, आंख की तो सत्त है मैया!

कहानी ५

पठानों की किसी बस्ती में एक मुल्ला था, जो कुछ फातिहः दरूद का उनके काम होता, तो उसको बुला लेते, और अपना काम करवा लेते इसमें शबेरात जो आई तो हर एक के घर से उसे बुलाह हुई. तब उसके किसी मित्र ने पूछा, कि कहो मित्र आज तुम अकेले क्या करोगे, और किस प्रकार घर घर फातिहः पढ़ोगे, बोला भाई मुझे फातिहः पढ़ने से क्या काम, मुर्दः दोज़ख जाय या बिहिश्त मुझे अपने हलुए मांडे से काम है.

कहानी ६

किसी ने एक ज्ञानी से पूछा कि महाराज मनुष जगमें जनमकर दुख से क्यों कर छूटे, सो दया कर मुझे कहो. तब इसने उसको उत्तर तो न दिया, पर यह दोहा पढ़ा॥ भुगत मान भुगते बने ज्ञानी मूरख होय, ज्ञानी भुगते ज्ञान सों मूरख भुगते रोय.

कहानी ७

दो कलावंत दक्षिण से कमाई किये दिल्ली को चले आते थे, कि बाट में डोंडों ने आय लिया, और लगे बर्छियां भाले उठाय २ मार २ डाल २ पुकारने. उस काल ये दोनों भी झट गाड़ी से उतर, चद्दर पर्तल के ढूंढ पर जा बैठे, और लगे उन से पूछने कि बलैया लों, मार २ डार २ ही कर जान्यो है, कै कभू चौपड़ हू खेले हो, इनमें से एक बोला, कि क्यों, इन्होंने कहा, कि कहू जुवा हूं मार्यो जातु है. इस रहस से वे बहुत मगन हुए, और इन्हें लूट

चलेगए·

कहानी ८

किसी ठाकुर द्वारे में कई एक अनादी चैन से बैठे गाय रहे थे, और बहुत से लोग खड़े सुन्ते थे· इसमें एक ढीठ बैरागी आया, और उनके हाथ से तंबूरा ले, सबके बीच में बैठ, लगा वे सुरा होगाने· उसका खटराग सुन सब उदास हुए, पर कोई कुछ न बोला· निदान एक चौबे खड़ा सुन्ता था, उसने कहा, बाबा जी! बस करो, बस करो, बहुत गाये· बैरागी ने खिजलाके उत्तर दिया· महाराज मैं तो अपने ठाकुर को रिझाता हूं, और कोई रीझा तो क्या; और कोई न रीझा तो क्या; चौबे बोला, अरे! मोको तो रिझाय ही न सक्यो, कहा ठाकुर मोहूं सों कूढ़े हैं जो तू रिझाय लेगो; यह सुन वह लज्जित हो चुपचाप उठकर चला गया·

कहानी ९

कई एक अमीर जोड़े किसी ठाम एक कीन गाड़ु, उस पर रुपया रख बाण चलाते थे; और होड़ यह थी, कि जो इस रुपये को उड़ावे सो ले, ऐसी किसी फ़क़ीर ने जा वहीं उनसे कहा कि बाबा कुछ मोला नाम का सौदा करो· उनमें से एक ने हंसकर कहा शाह साहब! निशान मारो और रुपया लो· फ़क़ीर ने रुख उसके हाथ से तीर धनुष ले, याम भ्रकुटकर के एकबान अटकल पच्चू मारा कि वह रुपया उड़ गया, वे बोले वाह वा! इन्ने दौड़के रुपया तो उठा लिया, और कहा, क्यों बाबा! फ़क़ीर को कुछ उत्तर न मिला; उन में से एक ने कहा, सांई! रुपया तो मिला, अब क्या कहते हो; बोला, बाबा यह तो मेरे वास्ते के लिया है, अभी फ़क़ीर का सवाल बाकी है·

कहानी १०

एक सिक्षक किसी गांव में कितने एक लोगों को सिक्षा देता था, इसमें कोई गंवार भी वहां आ बैठा और लगा उसका मुह देख २ बे चैन होने, इसको रोता देख सबने जाना कि यह कोई बड़ा कोमल सुभाव है जो इतना रोता है· एक ने इस से पूछा कि भई! सच कह तू जो इतना रोता है, तेरे मन में क्या आया है; सिक्षक को उंगली से बता बोला कि इन मियां की डाढ़ी हिलती देख मुझे अपना मुआ हुआ

प्यारा बकरा स्मरन आया, कि जब तब उसकी भी इसी भांति डाढ़ी हिलती थी. इसलिये मैं रोता हूं. यह सुन सब खिल खिला उठे, और सिक्षक लज्जित होकर रह गया ॥

कहानी ११

कोई बड़ा धनी था, पर उसके लड़का न था; उसने लड़के के लिये बहुतेरा उपाय किया, और रुपये खर्चे, पर न हुआ; तब उसने हारमान एक दरिद्री के लड़के को गोद लिया, और अपने धनसंपत का स्वामी उसे किया कि ले खैगीछे वह मर गया, यह उस धन को पातेही लगा अंधाधुंध लुटाने, और कुचाल चलने, इसकी यह चाल देख किसीने एक से पूछा कि इसका क्या कारन, जो यह धन पातेही उकलाया; उसने इसके उत्तर में यह दोहा पढ़ सुनाया. ॥ कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय । वह खाये बौराय है यह पाये बौराय ॥

कहानी १२

मथुरा के चौबे बड़े ठोल होते हैं, एक दिन कोई चौबे हाट से भारू बैंगन मोल ले आया, देखकर उसकी जोरू ने पूछा, कहा भर्ता कस्य, यह बोला, मोतंकहा चूक परी; उसने उत्तर दिया, लोग तुम्हें जोय सी कहते हैं, यह सुन चौबे निरुत्तर हुआ ॥

कहानी १३

लाड़ कपूर नाम दो कलावंत अकबर के यहां थे, सदा बादशाह उनसे चहल करते, इस से वे भी ढीठ हो रहे थे, एक दिन बादशाह ने उनमें से किसी को कहा, गाओ वह बोला, नहीं महाराज! बैल, फिर बादशाह ने कहा अबे कुछ बोल, उत्तर दिया, मोल बीस रुपये, फिर शाह ने कहा क्या हराम ज़ादा है, उसने कहा हराम ज़ादा हो तो कौड़ी भी न लूं. इतनी बात सुनतेही बादशाह ने क्रोध कर उन्हें कहा मेरे मुल्क में रहे तो बे तरह पेश आऊंगा. और गढ़ से निकलवा दिया ये मारे डर के दिनको तो दुकोसी चौकोसी नगर के बाहर गाओं में निकल जाते, और रात को नगर में आते, इसी भांति नित सांझको आते, और दो घड़ी के तड़के चले जाते. देखी एक दिन ये इधर से जाते थे और उधर से आरबेद किये बादशाह घोड़े पर चढ़े चले जाते थे. ये दूर से

देखतेही एक ऊंचे बड़के पेड़पर जा चढ़े और उन्हों ने भी घोड़ा मार किसी पेड़के नीचेला खड़ा किया, और इन्हें पहचानकर कहा क्यों बे मैंने जो तुमसे कहा था कि मेरे मुल्कमें न रहना, उत्तर दिया कि बलैया लेऊं हम सबमुल्क में फिर आये, जहां देखो तहां आपही को मुल्क देख्यो, यातें हार मान अब आकाश की बाट लई है. इस रहस्यसे प्रसन्न हो उनका अपराध क्षमा किया, और चाकरी बहालकी.

कहानी १४

किसी कुंजड़न के चालीस बरसके बैसमें बहुत मानते मानते एक बेटी हुई, उन्हे निपट प्यार लाड़से उसका नाम फ़ज़ीहती रकवा. दैवी वह दो तीन बरस की होकर मरगई, उसके सोग से नित सांझ सबेरे नामलेले रोया करे. एक दिन सो हाय मेरी फ़ज़ीहती हाय मेरी फ़ज़ीहती करके रो रही थी कि इसमें उस का स्वामी आया और समझाने लगा, कि सुन नेक बरन हमारी तुम्हारी आवरदा और परमेश्वर की दया चाहिये तू एक फ़ज़ीहती का क्या रोती है, बहुतेरी फ़ज़ीहती हो रहेगी ॥

कहानी १५

एक कायथ अनचढ़ घोड़े पर बैठा हाटमें चला जाता था, कि किसी घुड़चढ़े ने उसे मेंड की से भी पीछे हटा बैठा देख के कहा, भैयाजी! कुछ आगे हट बैठो. बोला क्यों; कहा आसन खाली है, फिर उसने उत्तर दिया क्या तुम्हारे कहे से हट बैठें जो; जैसे साईस ने बैठा दिया है, तैसे बैठे चले जाते हैं ॥

कहानी १६

एक बनिया जो रवड़ लाता, सो नित का नित भूखे प्यासे कंगालों को बांट देता, और निहंगा लाड़ला हो रहा. एक दिन उस के बड़े भाई ने पांच चार पड़ोसियों को बिठाय उससे कहा, कि भाई जी हम महाजन हैं, हमें पूंजी रख व्यौहार किया चाहिये, इस प्रकार बेठौर ठिकाने दिया करें तो हमारी महाजनी क्यों कर रहे, उत्तर दिया, भाई जी क्या तुमने यह दोहा भी नहीं सुना

जो ऐसी बात कहते हो! सब से दिया अनूप है दिया करो सब को या घर में धरा न पड़ये जो कर दिया न होय ॥

कहानी १७

कोई क्रोधी अंधा कहीं चला जाता था कि एक अंधे कुएमें गिर पड़ा और लगा पुकारने कि चलियो दौड़ियो लोगो मैं कुए में गिर पड़ा लोग तरस खा दौड़के वहां गए और कुए के मनघटे पर खड़े होके उसके निकालने का उपाय करने लगे कुछ बेर जोहर्द तो वह भीतर से रिसाय के बोला कि शीघ्र निकालते हो तो निकालो नहीं तो मैं किधरही को चला जाता हूं मुझे फिर न पाओगे।

कहानी १८

किसी बड़े आदमी के पास एक ठठोल आ बैठा था, और उनके यहां कहीं से गुड़ आया उसने ठट्ठे से कहा कि महाराज मैंने जनम भरमें तीन बिरियां गुड़ खाया है बोला बखान कर कहा एक तो छट्ठी के दिन जनम घूंटी में खाया था और एक कान छिदाये थे तब और एक आज खाऊंगा उन्हों कहा जो मैं नदूं बोला दोही बार खाया सही।

कहानी १९

पांच चार पोस्ती किसी ठौर पर बैठे जटल मारते थे कि उनमें एक का कटोरा जो मलकर बन चुका तो बोला किस्तीने पिया पोस्त नौ दिन चला अढ़ाई कोस यह सुन कोई दूसरा बोल उठा कि वह पोस्ती न होगा कोई धावत होगा पोस्ती ने पिया पोस्त तो कुंड के इस पार या उस पार और जो बीचमें स्थान पावे तो वहीं ठहर जाय

कहानी २०

दो जान पहचान मिलकर भ्रमन को निकले और चले चले नदी के तीर पर पहुंचे तब एकने दूसरे से कहा कि भाई तुम यहां खड़े रहो तो मैं शीघ्र एक डुबकी मार लूं इसने कहा बहुत अच्छा यह सुन वह बीस रुपये इसे सौंप कर कपड़े तीर पर राख जो पानी में पैठा तो इसने चतुराई से

बीरबलने यह उत्तर दिया कि जो बादशाह के मनमें ठहरा था सुन करणा-
हने कहा, कि यही बात मेरे भी जीमें आई है. बीरबलबोला, कि महाराज!
यह वही बात है जो सो सियाने एक मत. पगहने कहा, कि यह कहावत
भी प्रगट है, जो सिर सिर अकल गुर गुर विद्या. फिर बीरबलने कहा, कि
महाराज! जीमें आवे तो इस बात को जांच लीजे. कहा, बहुत अच्छा, इत
नी बात के सुनतेही बीरबलने नवारमें से सो बुद्धिवान बुला भेजे, और
दो पहर रात के समे बादशाह के सोहीं उन्हें एक सूना कुंड बना कर कहा,
महाराज! की आज्ञा है कि इसी बिरियां हर एक लोग एक एक घड़ा भ
कर दूध का इस कुंड में लाडालो, बादशाह की आज्ञा को सुनतेही हर
एकने अपने जी में यह बात समझके कि जहां निन्यानवे घड़े दूध के हों-
गे तहां एक मेरा घड़ा पानी का क्या जाना जायगा. पानीही लाडाला.
बीरबलने पगहको दिखाया; पगहने उन सबसे कहा; तुमने क्या समझ
के मेरी आज्ञा को न माना; सच कहो नहीं तो भला न होगा. बिनमें सेहा
किसीने हाथ बांधबांधकर कहा, कि महाराज चाहो मारिये चाहो छो-
ड़िये हमारे जीमें यह बात आई कि जहां निन्यानवे घड़े दूध के होंगे, वहां
एक घड़ा पानी का क्या जाना जायगा; यह बात सब के मुखसे सुनकर
बादशाह ने बीरबल से कहा, जो कानों सुन्ते थे, सो आंखों देखा, कि सो सि-
याने एक मत-

कहानी २५

एक व्यक्ति बड़ा अफ़ीमी था, उसके यहां कोई टहलुवा नया चाकर हु-
आ; उसने उससे पूछा, कि अरे तू कुछ मादक द्रव्य तो नहीं पीता? बोला, महा
राज! मैं अफ़ीम बिना और किसी मादक द्रव्य को नहीं जानता. यह बात सुन
बहुत प्रसन्न हो अफ़ीम की डिबिया निकाल उसे आप खा उसे देकर क-
हा, कि अजी आज हमारा जी चाहता है, मीठे चावल शीघ्र पकादो तो खायं.
बहुत अच्छा कहके पकाने लगा. इसमें पीनक जो लगी तो दो पहर हो

चुकी, प्रभुने पुकार के कहा, कि अरे भाई चावल पके कै नहीं; बोला, महाराज! पक चुके हैं, पर दम देना रहा है, कहा शीघ्र लाओ। निदान बड़े जंजाल के साथ औरतें पकाते पकाते सांझ को प्रस्तुत करके ले गया; देख के प्रभुने कहा, धन्य है, क्या शीघ्र पका के लाया, इतनी बात के सुनतेही वह हाथ जोड़ कर बोला, महाराज! हम से आप की टहल न हो सकेगी। कहा क्यों; उत्तर दिया, ऐसी उतावली में एक दिन मेरा जी जाता रहेगा, और चला गया।

कहानी २६

शाहजहां बादशाह दारा शिकोह शाहज़ादे को बहुत चाहते थे, एक दिन अंबारीदार हाथी पर सवार और दाराशिकोह रववासी में चले जाते थे, इस में शाहज़ादे ने एक ओर देखा, जो कोई साहूकार बच्ची सोलह सत्रह बरस की, जिस का चांद सा मुखड़ा, काजल मिस्सी लगाये, पान खाये, नख सिख से सिंगार किये, जोबन का मद पिये, दोनों हाथ दोनों पल्लों पा दिये निलज्ज निधड़क खड़ी देखती है, बिसे निडरी देख शाहज़ादे ने रीझ कर बाप से कहा, महाराज! देखिये यह रंडी किस निलज्जता से मुंह देखती है। शाह ने शाहज़ादे की अट पटांगी बात देख कहा, बाबा जान! बाप भाई के सामने लाज कहा चाहिये, यह सुन शाहज़ादे लज्जित होके पछोरहा॥

कहानी २७

किसी तीरथ के निकट एक मठ में कितने एक उदासी रामावत नीमावत नानकपंथी दादूपंथी संन्यासी बैठे आपस में मत का बिवाद कर रहे थे; कोई किसी की बात न मानता था, अपने अपने पंथ की चौड़ाई बड़ाई करते थे, निदान झगड़ते झगड़ते तूबे खप्पर फूटने की दशा पहुंची; इस में एक अवधूत बोला, साधो क्यों झगड़ते हो; इस दोहे के अर्थ को तो समझो॥ घट घट में मूरत वही लाल जो नहीं बिवेक, जैसे फूटी आरसी खंड खंड मुख एक॥

कहानी २८

एक बड़ा मानुस बडाकृपन था, कि कभी कूठे हाथ से कुत्ता भी उसने न मारा था, और खाने खिलाने की तो कौन बात है, एक दिन कोई कलावंत भूला भटका उसके यहां जा बैठा, और उसे धनवान जान तंबूरा मिला अच्छा गाया और उन्नेरी भर कर सराहा इतने में रसोइयों ने आ निवेदन किया महाराज रसोई हुई है बोला मेरा सिर पिराता है, अभी रहिये एक नींद लेकर खाऊंगा यह छल कर मुंह ढक सो रहा और कलावंत भी उसके कपट करने का आशय बूझ खटिया तले पांयते लेट रहा पहर एक के पीछे भगवान ने किसी अपने भृत्य से पूछा कि अरे वह जंजाल गया इस में कलावंत ने उत्तर दिया कि बलैया लेऊं यह आपदा तो चरन न लगी है, बिन खाना खाये कब जाती है इस रहस को समझ प्रसन्न हो उसने इसे अपने साथ खाना खिलाया और कुछ दे विदा किया ॥

कहानी २९

किसी गांव में एक लड़का छदाम की कौड़ी ले भड़भूंजे की भाड़ पर गया, उसने कौड़ी ले चबेना तोल दिया इसने खंभे को घपची में कर दोनों हाथ बढ़ा लेते तो लिया, पर हाथ न निकाल सका तब रोने लगा, उसका रोना सुन बहुत से लोग वहां इकट्ठे हुए, और हाथों में खंभा देख व्याकुल हुए, किसी की बुद्धि कुछ काम न करती थी निदान एक ने उसमें से कहा कि भाई लाल बुझक्कड़ आवें तो यह लड़का बचे नहीं इसका बचना कठिन है यह सुन कोई उसका अपना लाल बुझक्कड़ को बुलाही लाया और आते ही उन्होंने देख कर कहा कि ॥ बूझे लाल बुझक्कड़ और न बूझे कोय, छान बलेंडा दूर कर इसे ऊपर कर लो ॥

कहानी ३०

लाड़ कपूर एक दिन अकबर बादशाह के सोहीं अच्छे गाये, शाह ने रीझ कर हाथी दिया, ये ले आये, बरस एक पीछे दून दोनों भाइयों के जी में आया

कि आज हाथी का आहार चलकर देखें कितना खाता है, और किस प्रकार खाता है; निदान आहार के समय मोढ़ा बिछा बिछा हाथी के पास जा बैठे, और उस का खाना देख निपट चकित और शोच में हो आपस में कहने लगे, कि भाई जी! बादशाह ने यह हमारे पीछे कोई बड़ी विपत लगादी न इस से बच सकें न किसी को दे सकें जो यह कई दिन यहां रहा तो इसके खाने के आगे हमारा गाना बजाना सब मिट्टी में मिल जायगा इतना कह कुछ मन में समझ, ढोल तंबूरा उसके गले में डाल दिया उन्हें नगर में जा धूमकी और नगर के लोगों ने जा बादशाह के यहां पुकार की बादशाह ने कहा देखो किस का हाथी है किसी ने आ कहा, महाराज! लाड़ कपूर का आज्ञा की कि उन्हें बुलाओ, कहने के साथही वे आन उपस्थित हुए; देखतेही क्रोध कर महाराज ने कहा, कि क्यों बे तुमने हाथी क्यों छोड़ दिया, उन्हों ने हाथ बांधकर कहा, महाराज! हमको जो विद्या आती थी सो बरस दिन में सब सिखला, ढोलक तंबूरा उसके हाथ दिया, इसलिये बादशाही नगर है इसमें जाकर कमावे, और कुछ दिन में आप खावे हमें खिलावे, इस रहस्य के सुन्नेही प्रसन्न हो बादशाह ने उनका अपराध क्षमा किया, और हाथी के लिये एक गांव दिया.

कहानी ३२

कोई बनिया बटोही बाट भूलके एक बन में जा निकला, जिसे वहां और तो कोई न सूझ पड़ा, पर एक जोगी दरवाई दिया, इसने उसे दंडवत करके पूछा, नाथ जी! आते हो कहां से, और जाओगे कहां; उत्तर दिया, बाबा हिंगलाज ज्वाला मुखी हरिद्वार कुरुक्षेत्र करके तो आया हूं, और काशी हो गंगा गोदावरी का मेला कर सेतबंध रामेश्वर को जाऊंगा, बनिये ने कहा, महाराज! एक बात पूछूं जो क्रोध न करो, बोला, बाबा! एक नहीं दो, कहा महाराज! हम गृहस्थी हैं, जो देश देश फिरें तो कुछ दोष नहीं; आप फ़क़ीर हो भटक भटक क्यों भरम गंवा ते हो; एक ठौर बैठकर किसलिये अपने भगवान का ध्यान नहीं करते; कहा, बाबा! तूने यह कहावत नहीं सुनी: बहता पानी निर्मला बंधा

गंधीला होय, साधू जन रमता भला दाग न लागे कोय,

कहानी ३२

किसी महाजन का लड़का बड़ा झगाड़ालू हुआ; जब वह लड़ाई झगड़ा करके पकड़ा जाता तब उसका बाप रुपये दे कर छुड़वा लाता. एक दिन किसके बाप से किसी उसके भाई ने समझाकर कहा, कि जो तुम इसी भांति बेटे की मामी पीके नित डांड भरोगे तो एक दिन सब धन खो मूरखों मरोगे. इसने पूछा मैं क्या करूं? उत्तर दिया, अब बंध विग्रह करके जो पकड़ा जाय तो न छुड़ाओ, फिर आपही सीधा हो जायगा. कहा बहुत अच्छा. निदान वह लड़ाई झगड़ा कर बंधन में पड़ा. और इसने न छुड़ाया, पांच चार बरस वहीं रहने दिया. इसमें किसी भले मानुस ने शाकुन से कहा, कि अब तुम्हारे बेटे ने बंध विग्रह से हाथ उठाया, और आहि की. उन्होंने उसकी बात मान विसे छुड़ा मंगाया. पीछे एक दिन उसने बातों ही बातों में किसी पर क्रोध किया. तब उसके बाप ने कहा, अजी! यह वही कहावत है, कि रस्सी जल गई पर बल न गया.

कहानी ३३

सुनते हैं कि बराहीम अदहम की सेज सवा मन फूलों से संवारी जाती थी. एक दिन बांदी ने सेज बनाके अपने जी में बिचारा कि इस बिछौने पर सोने से जी को कैसा सुख होता होगा. यह सोच इधर उधर देख कर जों उस पर लेटी तो सुख पाके विभोल होके सो गई, और फूलों के बीच छिप गई. पहर एक पीछे बादशाह भी आ उसी पर लेट गया. घड़ी दो एक पीछे उसने जो करवट ली, शाह घबरा कर उठ खड़े हुए, और बोले कि देखो इस खाट में क्या आपद है; शोर के कहते दस दौड़ आये, और उन्होंने बांदी को निकाल बाहर किया. देख कर महाराज ने कहा, कि इस मुई को मेरे सामने से को ड़ मारो. बात के कहते ही लोगों ने बे पीरहो सौ कोड़े गिन कर लगाये. उसने पचास हंस हंस कर और पचास रो रो कर खाये. यह कौतुक देख बादशाह ने उसे पास बुलवा कर पूछा, कि सुनतो मार खाने से मनुष रोता है, तू जो हंसी

और रोई, इसका क्या कारण; बोली महाराज फूलों की सेज पर पहर भर सोने का दंड परमेश्वर के यहां नहो यहांही हुआ, इस बात को सोचकर मैं हंसी; और आपको परमेश्वर के यहां इस सेज पर नित सोने का न जानूं क्या दंड होगा यह सोचकर रोई, कहते हैं, कि इबराहीम अदहम इसबात के सुनते ही राज छोड़ फ़कीरी ले जंगल को चला गया।

कहानी ३४

शाहजहां बादशाह के शाहज़ादे दाराशिकोह को चिड़ियों की बड़ी चाह थी एक दिन आज्ञा की नगर में ढोंडी फेरदो कि जिसके यहां जो जंतु आवेदी उड़ने लड़ने बोलने वाला है ले करकल भोरको हमारे यहां उपस्थित होय इस आनंद संवादके सुनतेही जितने नगरमें सुघड़थे अपने अपने चिड़ियों को उड़ाय लड़ाय दौड़ाय बनाकर बड़े सिष्टाचार से लेगये और कोई कुतूहली कौतुक देखनेके लालच से एक कौवे को पिंजरे में बंदकर कई एक भारी मोल काढ़पना उसपर डाल उनके पीछे लिये चला गया वहां सबके जंतु खुले और दिखलाये गये हर किसीने अपने अपने पंछी की प्रसंसाकी और पारतोषिक पाया जब इसकी बारी आई तोयह अपने मनमें घबराया निदान लोगोंने इसके हाथ से पिंजरा ले घराटोप उतार कौवा शाहज़ादे को दिखाया देखतेहीहंसकर शाहज़ादे ने इससे पूंछा कि अजी इन सबकी चिड़ियोंका गुण देखा और सुना अब तुम अपनी चिड़िया का बखान करो, यह क्या गुण रखताहै; हाथ बांधखड़ा हो बोला, महाराज किसीका उड़ना लियाहै, किसीका लड़ना किसीका बोलना किसीका दौड़ना; पर इसकी ढिठाई ही लीहै, इस अवसर की बानी से प्रसन्न हो दाराशिकोह ने सबके साथ उसको भी प्रसाद दिया।

कहानी ३५

किसी दिन अकबर बादशाह और बीरबल एक उद्यान के बुर्ज पर बैठे खेतों की हरियावल देख रहे थे, इसमें बादशाहने एक भोरको अरहर

केसेतमेंजाते देख पूरबी भाषामें ठट्ठे सेंबीरबल को कहा,बीरबल देख,तोर में मोर जात है,समझ के बोल्हीं किसी बोलीमें बीरबलने भी उत्तर दिया,महाराजा,तोर फाट त जात है मोर पैठत जात है,सुनकर बादशाह चुपही हो रहे.

कहानी ३६

एक कवीश्वर अपने शिष्य को साथ ले किसी नगर में कमाई के लिये गया और वहां के धनी लोगों से भेंट करके कई बरस बिसठौर रहा,पर कुछ उस से लाभ न हुआ;क्योंकि वहांके लोग अपनी मूर्खता से दूसके गुन को न समझे; तब दूसके शिष्यने यह दोहा उसके सोहीं पढ़ा ॥ जहां न जाको गुन लहै तहां न ताको ठाम; धोबी बैठक हा करै दीगंबर के गांव ॥ उसके उत्तर में गुरु ने भी यह दोहा कह सुनाया. जहां न जाको गुन लहै तहां न दरब सुख बात, बनमें तज मुकुतान को पहरत गुंज किरात.

कहानी ३७

कोई भला मानुस किसी छात्रके मुखसे एक पंडित की विद्याकी प्रसंसा सुनकर मोही हो उसके घर भेंट को गया;वह अपने द्वारपर बैठा पोथी देखता था,यह प्रणाम कर उसके सोहीं संकोच से बैठ बोला,धर्मावतार यह कौनसी पोथी है;उत्तर दिया,तू कौन है जो मुझसे पूछता है;कहा,आपका सेवक हूं बोला,जा तुझे इसके समझने की सामर्थ नहीं.इसने कहा,भला बूझा गया कि आप देवी विद्या की पोथी देखते हैं,कि जिस से बिन भेंट आपने मेरी सामर्थ जान ली.इस बात को सुन वह लज्जित हो बोला,नीति शास्त्र की पोथी है, तब इसने हंसकर यह कहा,कि आप इसी से सुशील हैं;और अपनी बात ली.

कहानी ३८

एक बहुरूपिया जंगलमें भेंड़ु अपनी चराता था,देवी उसकी एक भली भेंड़ खोई गई;तब उसने एक लंगड़ी भेंड की ओर देख कर कहा,कि जो वह मिले तो इसमें किसी को भगवानके प्रीत्यर्थ दूंगा.इतना कहतेही भेंड मिल ली.तब वह लंगड़ी भेंड़ का कान पकड़ किसी को देने चला,इस में सोही

से एक और बहरा ब्राह्मण आया उसने विसे देख कहा कि यह भेड़ तू ले. वह बोला राम दोहाई. मैंने उसकी टांग नहीं तोड़ी. निदान यही कहते कहते दोनों हाकिम के यहां गए; हाकिम बहरा था. और अपने घरमें किसी से रोस कर बैठा था; इस में उन्हें दूरसे आते देख उन्ने अपने जीमें जाना कि कदाचित ये विसीका संदेशा लिये आतेहैं. यह इतना कह अपने घर के भीतर भाग गया, कि उस दुष्ट की बात मैं कभीं न सुनूंगा.

कहानी ४९

किसी उमराव के दो बेटे थे, एक दाता दूसरा कृपिन, दाता तो अच्छे २ लोगों को बड़े बड़े दमाह करके नौकर रखता था, और कृपिन छोटे छोटे लोगों को थोड़े महीने पर चाकर रखता, एक दिन उनके बापने विन दोनों को किसी बैरी से लड़ने को भेजा; लड़ाई में दाता की जीत हुई और कृपिन की हार. इस बात के सुनते ही उनके बापने किसी अपने सभासद से पूछा, कि इसका क्या कारन जोए कहा गए और एक जीता इसने उत्तर दिया कि धर्मावत्तार! आपने यह कहावत नहीं सुनी है ॥ जोमारे टट्टू संग्राम, तो क्यों खरचे ताज़ी को दाम ॥

कहानी ५०

एक कछुए और कौवे से बड़ी प्रीत थी. काम पड़ने से एक का एक सहारा करता. एक दिन किसी चिड़ीमार ने कौवे को पकड़ा, तब कछुए ने चिड़ीमार से कहा कि तुझे इसके ले जाने से हाटमें क्या मिलेगा; बोला, दो पैसे कहा जो तू इसे छोड़दे तो मैं तुझे एक मोती दूं. कहा अच्छा, उसने डुबकी मार के मोती ला दिया; पर इसने कौवे को न छोड़ा. तब कछुवे ने कहा, मैंने तुझे मोती तो ला दिया, अब इसे क्यों नहीं छोड़ता; बोला, एक मोती और लादे तो छोड़दूं, नहीं तो नहीं छोड़ूंगा. इसने कहा, अच्छा, तू इसे छोड़ दे मैं ला देता हूं. वह बोला मैं तेरी बातका कैसे प्रतीत करूं. कहा इसने, मैं झूठ नहीं बोलता. इस बातके सुनतेही उसने कौवे को छोड़ दिया, और इसने दूसरा मोती ला दिया, फिर चिड़ीमार दूसरे मोती को छोटा देख बोला यह मैं न लूंगा. इसके समा-

न का लादे दूसने कहा,योंतो नहीं,पर जो तू यह मोती मुझे दे तो मैं दूसके समान का वहांसे देख लाऊं,मारे लालचके दूसने मोती दिया वोह ले डुबकी मार बैठ रहा,एक पहर के पीछे दूसने घबराके विसे पुकारा,तब उसने आके रिसियाके कहा,कि तू बड़ा मूढ़ है,जो मुझे पुकारता है,क्या तैंने यह कहा वत्त नहीं सुनी,जो कुछ खुदा करे सो हो,लेना एक न देना दो यह सुन दिड़ीमार निराश हो अपने घर गया ।

कहानी ५१

बनारस में एक चौबेने किसी स्थानपर कितने एक विद्यार्थियों को हिल हिल का पढ़ते देख किसू पंडितसे प्रश्न किया,॥ दोहा॥ झुकत झुकत विद्यार्थी कहा बूढ़े कहा बार । मैं तोहि पूछो हे सखे याको कौन विचार उत्तर दिया, आवो तुमद अवाम्यदे अपने बैठ करार। रतनलैनकों झुकतहैं फिम्कत देख अपार ।

कहानी ५२

किसी दिन सवाई जयसिंह एकठौर बैठे ब्राह्मण खिलाते थे,और द्वार पालों को यह आज्ञादी थी,कि बिना ब्राह्मणके भीतर और कोई आने न पावे, दूसमें एक भाट द्वारपर गया,और उसने चाहा कि भीतर जाऊं,पर पौरियों ने न जाने दिया दूसने कारन पूंछा,उन्होंने जो राजा की आज्ञा थी सो कह सुनाई,तब दूसने दूसना राजाको लिख भेजा ॥ दर्द मंद दरवाज़े ठाढ़े भीतर दै बे दुआ । रस की बतियां हम जानत है वे बांधत हैं दुआ । दूस बातके पढ़तेही हंसकर राजाने सौ रुपये दिलवाके उसे बहले असीसदे आनंदसे अपने घर आया ।

कहानी ५३

एक बनियां सदा भेंड़माल भरा करता,किसी दिन तिसके बड़े भाईने आके उससे कहा,कि भैया तुमेंदूसमें क्या लाभ होता होगा,कुछ और कमाई क्यों नहीं करता,जो अधिक लाभ हो,बोला,भाई,जी दूसमें भी आमके आम गुठली के दाम होते हैं,और कितना लाभ होगा,उसके भाई ने कहा,मैं कुछ नहीं समझा बुझाके कहो,उत्तर दिया,लाभ समेत दाम उठाता हूं,और

बचता है सो बरस भर अच्छी भांति खाता हूं, यह सुन वह चुपकर ही चला गया.

कहानी ४४

दूट के दिन दो ढाढ़ी बच्चे. एक हथियार बंद और दूसरा निहत्था. मिल कर किसी उमरा के यहां ढोलक तंबूरा साथ लिवाये गाने को गये; और जब वहां से गाय बजाय रिझाय पारि तोषि कले फिर आये, तब आपस में बटवारा करने की बिरियां झगड़ने लगे. कई एक बटोही कौतुक देखने को आन खड़े हुए, और उन में से एक ठोलने निहत्थे से कहा, कि अजी! तुम इस से डरते नहीं; इस के हाथ में तलवार है. बोला, कि महाराज! यह अपने जीमें कुछ और न समझे, मेरे घर बटुए में दो रुपये धरे हैं. घर से रुपये ले, चौक में जा, डेढ़ रुपये की तलवार मोल ले, आठ आने बाढ़िये को दे, मसूरी बाड़ चिरवाला, अभी सिर काट डालता हूं. इस बात को सुन, सब कौतुकी लोग हंस पड़े. और उन दोनों को मिला चले गये.

कहानी ४५

राजा सवाई जयसिंह ने मथुरा में अबदुन्नबी खां की मसजिद की गुमटी की उंचाई देख कर कहा, कि इस पर से कोई कूदे तो सहस्र मुद्रा दूं, यह सुन के एक चौबे ने पूछा, कि महाराज! जो या पैतें कूदे गो, वाहि सहस्र रुपया देहुगे; कहा, हां. इतनी बात के सुनते ही वह चौबे अपने घर जा, एक बुढ़िया सौ बरस की कंठगत प्राणा हो रही थी, उसे ले आया. उसे देख कर राजा ने कहा, इसे क्यों लाये हो; बोला, यही गुमटी पर सों कूदेगी, सहस्र रुपया देहु. राजा ने कहा, बुढ़िया की होड़ नहीं. उत्तर दिया महाराज! आप कों बूढ़ी बारी तें कहा काम; तुम्हे एक हत्या लेनी सो लेउ, और मोकों सहस्र रुपया देउ. इस रहस और अवसर की बानी से प्रसन्न हो राजा ने उसे रुपये दिलवा दिये; वह ले अपने घर गया.

कहानी ४६

एक बनिया अपने घर में अचेत पड़ा रात को नींद में सोता था, कि एक

चूहा उसके पेटपर हो कर इधरसे उधर चलागया; वह नींद से चौंक पड़ा, और लगा डाढ़ मार मार रोने, और यहकहने · किहाय प्रान गया, हाय प्रान गया। उस के रोने का शब्द सुन के सब घरके लोग घिर आये, और लगे पूछने, कह, तुझे क्या दुख है जो रोताहै; बोला, इस घरमें रह नहीं सक्ता · कहा क्यों; उत्तर दिया, एक चूहा मेरी छाती पर होकर इस ओर से उस ओर चलागया · लोगोंने कहा, चलागया चलागया · इस लिये इतना रोना क्या था। बोला, किसीने सच कहा है, कि जातन लगे सोई तन जाने दूजा क्या जानेर भाई! मैं उसके जानेपर नहीं रोता, रोता इस कारन हूं, यह पंथ बुरी निकली · आज चूहा गयाहै, कल सांप जायगा तो मैं काहे को जीता रहूंगा ·

कहानी ५७

एक रक्तरानी नवयोवना सुंदरी चतुरी चरफरी बसंत ऋतुमें अपने बहनेली के यहां गई और कुछ इधर उधर की मन लगान बातें कर रही थी, कि प्यासी हुई, और पानी मांगा · इस की उस मुंह बोली बहनने को रे कुल्हड़े में भरकर पानी ला दिया · जों इसने मुंह लगाकर पिया तो कुल्हड़ा होठों से लगरहा; यह खिल खिलाकर हंसी, और इस दोहे को पढ़ने लगी; रे माटी के कूल्हड़ा तोहि डारों पटकाय, होठ रखेहैं पीव कौं तू क्यों चूमे जाय; यह दोहा सुन उस की बहनेली ने कुल्हड़े की ओर से उत्तर दिया; लात सही मूकी सही उल्टे मोहे कुराय, इन होठन के कारने सिर पर धोरे खांय;

कहानी ५८

एक महाजन का गुमाश्ता: कहीं से रोकड़ लिवाये चला आता था; बाट में किसी सरायके बीच उतरा · कि वहां डाका आया · तब इसने वहां के लोगोंसे कहा, कि भाइयो! जो तुम लड़ भिड़ के इन रुपयों को डाकैतों के हाथसे बचाओ तो आधे पाओ · निदान उन लोगोंने जों तों कर रुपये बचाये और आधे पाये; शेष रहे सो ले वह अपने प्रभु के पास पहुंचा · उस

काल उस के प्रभुने बाटका वृत्तांत सुन, प्रसन्न हो उसे एक दुशाला पारितोषिक देकर कहा, कि धन्य! तुमने अच्छी चौकसी की; उस समय यही उचित था. यह कहावत हमभी सदा बड़ों के मुखसे सुन्ने आये हैं कि जो धन जाता जानिये तो आधा दीजे बांट.

कहानी ४९

किसी उमराव के यहां कोई भला मानुस कई एक महीने से आवा गमन करता था. एक दिन उसने इसकी अवस्था पर दयाल होकर पांच रुपये अपने दीवान से दिलवाये, उसने खट खटी और अप्री दुष्टता से टाल मटोल करके कई एक दिन लगाये; तब दरबान इस विचारने सब के सोहीं कहा, कि दीवान जी महाराज! भला मानिये कै बुरा, ठीक बात कहने में कुछ दोष नहीं; आप की यही कहावत है कि, दातादे, भंडारी का पेट फूले. इस कहावतके सुन्नेही लज्जित हो उसने इसे वोहीं रुपये गिन दिये.

कहानी ५०

किसी ठौर पर कई एक साहूकार बैठे आपस में अपनी अपनी कमाई का वृत्तांत कह रहे थे, कि एक मुंहफट पुरुष भूला भटका वहां जा निकला, और उन की बातें सुनकर हांथकर यह कविता पढ़ी; जो आये इस जहानमें तो कुछ कमा चले, एकबे मलीक: हमहैं कि दिल भी गवां चले.

कहानी ५१

एक गौंवार किसी वैद्यके यहां वैद्यक की पोथी पढ़ने नित आता था, और यह बात कहता, कि महाराज! जो मुझे आपकी कृपा से इस विद्या में कुछ सुधबुध हो जायगी तो यह बिन मोल का दास आपके चरण छोड़कर कहीं न जायगा, और सदा सेवामें रहेगा. निदान इसी फर्फद से कई एक बरस के बीच संपूर्ण पोथी पढ़ सुनके वहां से ऐसा गया कि जैसे गधे के सिरसे सींग गए, फिर देखभी न पड़ा. एक दिन वैद्यने उसके किसी मित्र से कहा, कि तुम्हारे मित्रने हमसे क्या बचन हारा था, और अबदेखाई

भी नहींदेता; वह बोला, महाराज! क्या आपने यह कहावत नहीं सुनी जो ऐसी बात मुंहपर लानेहो, कामसरा दुखबीसरा, छाछ न देत अहीर.

कहानी ५२

कोई पुरुष किसीपर मोहित था, पर मोरलाजके मारा प्रेम उसके आगे प्रगट न करता, और जिसपे मोहित था वह भी जान बूझकर लाज से कुछ न कहती, एक दिन वे दोनों किसी ठौरपर रातको बैठे थे. कि एकपतंग दिये पर आय जला. उसको जलता देख नायकने व्यंग से यह दोहा पढ़ा. आहि दई कैसी बनी अन चाहत को संग, दीपक को भावे नहीं जल जल मरे पतंग. इस के उत्तर में नायकाने भी यह दोहा कह सुनाया. आव पतंग निशंक जल जलत न मोड़ें अंग, पहले तो दीपक जले पाछे जले पतंग.

कहानी ५३

अकबरबादशाह की यह रीति थी, कि सदा फ़कीर का भेषले रातको नगर की गली गली नाके नाके फिर्ते, और जिस दरिद्री कंगाल दुखी को देखते, उसका दुख दूर कर्ते. एक दिन जो निकले तो देखते क्याहैं, कि कोई साहूकार की बेटी चोरके ऊपर गौरव में खड़ी रोरही रही है, ये बोले. माई! टुकड़ा भेजियो. वह रोटी देने आई; इन्होंने उससे पूछा. तू क्यों रोतीहै; उत्तर दिया, मेरा स्वामी बारह बरस से जहाज़ ले बनज को निकला है, उसका कुछ समाचार नहीं पाया. इस दुखसे रोती हूं. इतना सुन रोरीले, असीसदे, आगे बढ़े तो देखा, कि कोई रंडी रोरी चक्की पीस रही है. उसी भांति उससे भी पूछा, उन्ने कहा, मेरा स्वामी चोरी को गयाहै. उसे तीन दिन हुए, न जानूं जीताहै कि मारागयाहै, इस दुख से रोती हूं. यह सुन वहांसे भी चल निकले. फिर देखा, कि एक स्त्री नवयौवना खिड़की में बैठी डाढ़ें मार मार रोती है. उससे पूछा, तू क्यों रोती है; उन्ने कहा, मेरा स्वामी अल्पवयस काहै. इस बातके सुनतेही बादशाह उदासहो घर आये. और दूसरे दिन राज मंदिर में बैर बीरबल

की और देख बोले, वे तीनों बिल्लायँ, वीरबल ने कुछ उत्तर न दिया. फिर बादशाहने कहा, बीरबल! वे तीनों बिल्लायँ. बोला, हाँ महाराज! इतनी बातके सुनतेही बादशाहने लीली पीली आखैं करके कहा. के तो इसका बरवान कर, नहीं तो मारडालताहूं. तूने क्या समझके मेरी बातका उत्तर दिया. बोला. एक समंदर बनजकर और नित उठ चोरी जायँ. बालकही से नेह लगावे वे तीनों बिल्लायँ. इस बातके सुनतेही प्रसन्नहो बादशाह ने बीरबल को निहाल कर दिया.

कहानी ५४

किसी दिन अकबरबादशाहने लाड़ कपूरका गाना सुन रीझके एक घोड़ा दिलवाया; घुड़सालके अध्यक्षने नटखटी करके भला घोड़ा न दे एक बहुत बूढ़ा तुर्की दिया, ऐसा कि जिसके आंडु घड़े के समान थे; येले प्रसन्नहो, अपने घर आये. कितने दिनोंके पीछे एक दिवस बादशाहने इन से कहा. कि कल तुमभी मेरे साथ तड़के आखेट को चलियो, वे बहुत अच्छा कह कर विदाहो अपने ठौर पर आये. और दूसरे दिन चार घड़ी रात रहे असवारहो दोनों बादशाहकी डिउढ़ी पर जाउपास्थितहुए. एक भाई! उसी तुर्की के गलेमें बालू का भरा घड़ा बांध आरूढ़ हो गयाथा. जो महाराज! निकलेतोंही इन्होंने बढ़के जुहार किया; शाहने देखतेही हँसदिया, और कहा कि अबे! भोरही भोर यह क्या सवांग बनालायाहै; बोला, बलैयालेंऊ, ऊलनपड़नेकेडरसों होऊ गोबोझसमानकर लियोहै, और महाराजके दारोगा: ने तो गिरानेको बिचार भलो कियो हो. इस रहसके सुनतेही बादशाहने अध्यक्षकोडांटा, और इन्हें उसके बदलेदो घोड़े दिये.

कहानी ५५

सूरज मन्नेके समें में किसी मुसलमानने उट से एकजाटसे कहा, अबे जाट बेजाट! तेरे सिरपरखाट. उसने कहा, अबे मियां बेमियां तेरे सिरपर कोल्हू. यह बोला, तुक तो न मिली. उसने उत्तर दिया, कि तुक न मिली

तो कहा भयो· बोल्न तो मरेगो।

कहानी ५६

दो ज़मीदार अपने गांवसे कहीं को चले जाते थे; बाटमें एक पचास साठ बीघे अच्छी भूमिका खंडला देखकर उनमें से एकने कहा, भाई! यह ठौर हमारे तुम्हारे हाथ लगे तो क्या करो; बोला, मैं तो अपने बांट की भूमि में फुलवारी लगाऊं; कहो तुम अपनी भूमि में क्या करोगे; कहा, मैं अपनी गाएं भैंसें चराऊंगा· इसने कहा, भला मानो या बुरा· मैं तो अपनी फुलवारीके पास न चराने दूंगा· वह बोला, तुम्हारा कुछ बीका नहीं है, मैं अपनी ठाम में जो चाहूंगा सो करूंगा· निदान इसी भांति हुहातुही करके लगे हाथापाई करने· इसमें कई एक बटोही जो इन को झगड़ते देख इकट्ठे होगए थे· उन्होंने बीच बिचाव करके इन से पूछा· कि तुम क्यों आपस में लड़ते हो, इसका कारन कहो; उन्होंने सब वृत्तांत कह सुनाया; सुनतेही उनमें से एक मनुष बोला, कि भाई! तुम्हारी वही कहावत है कि, सूतन कपास कोली से लट्ठा लट्ठी·

कहानी ५७

किसी ठौरपर पंडित साहूकार और सिपाही ये तीनों बैठे विवाद कर रहे थे; एक कहता था, कि मनुष गुनसे बड़ा कहलाता है· और दूसरा कहता था, कि नहीं, धनसे· और तीसरा कहता था· कि न सहायकों से पुरुष बड़ा कहलाता है· इसमें कोई कवीश्वर वहां जा निकला; विन्होंने इसे मध्यस्थ मानके कहा, कि महाराज! इस बातमें जो तुम्हारे निकट सच हो सो अपने धर्म से कहो तब इसने उनके उत्तरमें यह सवैया कह सुनाया; गुननें गुरु वो होत न हिं संपतान सहाय तें, पूनो चंद उदोत, दुतियाकी सरवर नहीं;

कहानी ५८

एक दिन अकबर बादशाहने बीरबल से कहा, तू मुझे चार मनुष

लादे, सूरबीर, कायर, लज्जावान, निर्लज्ज, बीरबल दूसरे दिन भोर-ही एक रंडी को साथ अपने बादशाह के तांहीं ले गया; पातशाह ने पूछा, लाया, बोला, महाराज! उपस्थित है यह कह बीरबल ने उस रंडी को बादशाह के सामने ले जा खड़ा किया। बादशाह ने कहा, अबे! मैंने चार जना बुलाये थे, तू एक को लाया है और तीन कहां हैं; निवेदन किया, महाराज! इसमें चारों के गुन हैं। आज्ञा की, बरदान कर, बोला। कि जिस काल यह अपने ससुरार में रहती है, मारे लाज के अच्छी तरह गला खोल कर बोलती भी नहीं; और जिस बिरियां कहीं व्याह में गालियां गाती है, तो बाप भाई स्वामी ससुर और सब कुनबे के लोग बैठे सुना करते हैं। पर यह किसी की लाज नहीं करती; और जब अपने स्वामी के पास बैठती है, तब रात को अकेली घर के कोठे में भी नहीं जाती, और कहती है। मुझे जाते डर लगता है फिर जिस समें किसी से इसकी आंख लगती है, तो आधी रात की अंधेरी में वे हथियार यार के पास निधड़क चली जाती है; और चोर चवार भूत प्रेत से नहीं डरती। यह बात सुन बादशाह ने प्रसन्न हो बीरबल को पारितोषिक दिया, और कहा, तू सच कहता है।

कहानी पूरी

कोई जोगी किसी जंगल में बाट पर एक पेड़ के नीचे भभूत लगाये, धूनी जलाये, सेली सींगी मुद्रा पहने बाघंबर बिछाये, नंगा धड़ंगा आसन मारे, अपने भगवान के स्मरन में मगन बैठा भजन करता था, कि चार बटोही बिसमारग से आये। और उसी तरवर के नीचे जा बैठे। उन में से पहले एक ने उस जोगी से कहा कि आज क्या है, जो तुम जुआरवे न्हे नहीं गये; कुछ हार आये हो जो इस बन में यह सवांग बनाकर बैठे हो। बोला, हां बाबा सच कहता है। फिर दूसरे ने कहा, तू कल मद पिये नगर की गलियों में गिरता पड़ता फिरता था, आज किस लिये यहां छलकर आन बैठा है; उत्तर दिया, हां बाबा सच कहता है। तीसरे ने कहा

तुमने इस बाटमें बहुत यात्रियों को लूटा है, कहो अब किसकी नाकपर बैठेहो; बोला, हां बाबा सच कहता है. पीछे चौथेने कहा, नाथजी! आप भगवानके स्वरूपहो, कुछ मेरी अवस्थापर कृपाकरो. उसे भी यही उत्तर दिया, हां बाबा सच कहताहै. निदान यह कह सुनकर वे चारों चलेगये; तब एक और बटोही जो अलग वहीं बैठा सुनता था, उसके पास आया, और आदेस कर बोला, कि नाथजी! आपने चार मनुषके चार प्रश्नका एकही उत्तर दिया, इसका क्या कारन; उसने इसेभी कहा, कि हां बाबा सच कहता है. यह बोला, कि महाराज! मैं विन जैसा नहीं हूं कि मुझेभी बहका देवो. विन समझाये आपका पींछा नछोड़ूंगा. इसबातके सुनतेही उस जोगीने कहा, कि बाबा जो कोई जैसा होताहै वह दूसरे को भी वैसा समझताहै; उनके कहनेसे मेरा क्या बिगड़ा; फकीरतो जैसे का तैसा बैठा है.

कहानी ६०

एक दिन राजा बीर बिक्रमाजीत के यहां चारजने एक साथ चोरी के बिषयमें पकड़े गये. राजाने उनमें से एकको पास बुला इतना कह छोड़ दिया, कि तुम्हारे जोग यह कामन था. और दूसरे को पांच चार गालियांदे निकाल दिया; तीसरे को दस बीस धौल जूतियां लगवा निकलवा दिया; और चौथे की नाक और काल कटवा कालामुंह करवा गधे पर चढ़वा नगर से बाहर करवाया. यह न्याव देख प्रत्येक दरबारी एक एकका मुंह देखने लगा. उस काल राजाने उन से पूछा, कि तुम्हारे मनमें क्याहै सो कहो. उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, धर्मावतार! आपने न्याव तो समझही के किया होगा. पर इसका भेद कुछ हमपर न खुला. राजाने हंसके कहा, कि तुम इन चारों के पीछे लोग लगादो. कि ये जाके क्या करते हैं; इसका संदेसा लावें. उन्होंने सोई किया. तीसरे दिन जब लोग समाचार ले राजा के मांही आ उपस्थित हुए. तब राजाने देखकर कहा, कि उन के समाचार ले आये; उत्तर दिया, हां पृथ्वीनाथ! लाये. आज्ञाकी, कहो.

वे दंडवत कर हाथ जोड़ बोले कि धर्मावतार! जिसे आपने यह कह छोड़ दिया था कि तुम्हारे जोग यह काम नहीं था, वह तो जातेही विष खा मर गया, और जिसे गालियां दे छुड़वाया था, वह नगर छोड़कर चला गया; और जो मारखाके छूटा है, सो बिस दिन से घरके बाहर नहीं निकला; और महाराज! जिसकी नाक और कान काटे गये, तिसका वृत्तांत सुनिये, कि बारमें गधे पर आरूढ़ चला जाता था और दिखवैये भी दो चार सौ चारों ओरसे धिक्कार देते जाते थे, और सोहीं से उसकी जोरू आई, उन्ने उसे पास बुलाकर सब के देखते कहा कि तू घर जाकर न्हाने का पानी तुरन्त ताता कर रख, थोड़ा नगर फिरी न्हाहे, अभी फिर कर इन दुष्टों के हाथसे छूट चला आता हूँ, इतनी बातके सुनतेही राजाने उन लोगों से कहा, जिन्होंने कहा था, धर्मावतार! हम ने इस न्याव का भेद न जाना, कहो अब तो समझे; उन्होंने हाथ जोड़ कर कहा, कि पृथ्वीनाथ! आपका न्याव आपही से बने, दूसरे की क्या सामर्थ्य जो इस में दम मारे; यह वही है जो किसीने कहा है; रागी बागी पारखी नारी और न्याव, इन पांचों के गुरु हैं पर उपजे अंग सुभाव.

कहानी ६५

एक विद्यार्थी बड़ा कृपिन था, उसने किसी दिन एक जान पहचान को न्योता किया; खाना तो जो उसके यहां नित पकता था सोई पका, पर दो अंडे खाने की विरियां बड़े जतन से दस्तरखान पैला रक्खे, और कहा, कि सुनो भाई! इन अंडों से एक जोड़ा मुरग़ा का होता और जोड़े से हज़ारन बच्चे उपजते; यह आपके लिये है, जो मैंने अपना इतना टोटा किया, उसका चिनहारी भी एकही पुरुष था, बोला, यह तो आपने किया, पर भला घी बिन मैं किस भांति खाऊंगा; कहा, मैं अभी ले आता हूं, तनिक सबर करो, इतना कहदो पैसे और कटोरा ले वह मोदी की दूकान पर गया, और उन्ने कटोरा और दो पैसे उसके आगे रखके कहा, कि

अच्छे से अच्छा घी मुझे दे· वह बोला, ऐसा घी दूं कि जैसा सेत चरब· इस बात के सुनतेही यह पैसा और कटोरा ले चरब वाले की दूकान पर गया, और इस ने कटोरा और पैसे दे उससे कहा, कि भले से भला चरब मुझे दे· वह बोला, कि ऐसा उजला दूं कि जैसा बरफ़ यह सुन वह वहां से प्याला और पैसे ले बरफ़ वाले के पास गया· और बोला, कि अच्छे से अच्छा बरफ़ मेरे तईं दे· उस ने कहा, कि ऐसा दूं कि जैसा अमृत· यह वहां से भी कटोरा और पैसे लेके अपने घर आया, और एक प्याला मीठे पानी का भर कर चिनहारी के आगे ले गया· वह देख कर बोला, कि तुम तो घी लेने गये थे, यह क्या ले आये; उत्तर दिया· कि तीन निचोड़ में यह ठहरा है, उस से यही भला है· क्योंकि विलोग उपमेय से उपमा को उत्तम जानते हैं·

कहानी ६२

एक बनियां अपने बेटे को ब्याहने बरात लिये नगर से पर नगर को जाता था· बीच में एक जंगल मिला, उसमें कहीं दाएं बाएं उसका भाई झाड़े फिरने गया; देवी उसे वहां बांध रख गया· इसमें अबेर जो हुई, तो बनिया अपने मनमें यह समझा कि किसी देनवाले ने कदाचित मेरे भाई को बैठा रक्खा है, लगा रोजनामा खाते की बही देखने· जब देखते देखते उसमें किसी का देना पावना न ठहरा तब घबरा के जंगल में ढूंढने चला· कितनी एक दूर जाय देखे तो एक बाघ लेदा हुआ है, और इसके भाई का हाड़ चाम खा जो पड़ा है· यह देखते ही बोला, सुन तो ऊत के ऊत, न तेरा म्हारे खाते में नाम, न रोज़नामे में· तूने मेरे भाई को किस लेखे से खाया; जब वह हुंकार के घुरका, तब बनिया यह कह रोता पीटता फिर आया, कि हां इस लेखे से खाया तो ठीक है·

कहानी ६३

चार जने अपने गांव से निकले, ब्राह्मन, राजपूत, बनिया, और नाई, और किसी किसान के खेत पर जा लगे गन्ने उखाड़ उखाड़ फांदियां

बाँधने· और चूसने, उस खेतवालेने देखा, और अपने जीमें विचारा· किये चाहिये· और मैं अकेला, जो कुछ कहताहूं तो ये मुझे विनठोकनरहेंगे· इस से कुछ जुगत किया चाहिये, यह बात मनमेंठान, वह उन के पासगया, राम राम कर बोला, कि सुनोजी! ब्राह्मनहमारागुरु, राजपूत भाई, बनियांम हाजन· तीनमनुष के गांठे खानेकी तो कुछ चिंतानहीं, भलाइसनाईने क्या समझके मेरे खेतमेंहाथडाला; इसकान्याव तुम्हीं करो· यह बात सुनकरवेचुपहोरहे· तब इसने नाईसेगन्ने छीनलिये, और उसेजूतियां मार निकालदिया· फिर किसानकहनेलगा, कि सुनोभाई! ब्राह्मनगुरु, तुमभाई! हमारा तुम्हारा व्यवहारएकहै, इसबनियेने क्याबूझकेमेरा खेत उजाड़ा; भलाइसका तुम्हीं बिचारकरो, जो तुम हमइस के यहांसे रुपये लेंगे तो क्या यह अपना ब्याज़ छोड़देगा; इस बात को भी सुनवेकुछन बोले, तदतो इसने उसे भी धौलियाके गंडे छीन निकालदिया· निदानइसी भांतिसे उसनेहर एकको निकाला· और अपना धन बचाया· इसबात को सुन अचरज कर एकने अपने मित्रसे कहा· यह क्या अंधेरहै, कि चार जने पर एकजन प्रबलरहे· उसनेपूछा, वह क्याबातहै मुझेसमझाके कहो; उसने उनका वृत्तांत कहसुनाया; तब उसका चिनहारी बोला, क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनीजो इतना अचरज करतेहो; कि जुग फूटा और नर्दमा री गई·

कहानी ६४

किसी राजाकेयहां बिकटखां नाम कलावंत गानेबजानेकेहेत बहुतप्रतिपन्नहुआ, आठ पहर उसकी संगतमें रहे· एक दिन उस राजापरकोई बैरी चढ़आया, तो उसनेभी लड़ने की बनावरी की· और अपने साथियोंको हथियार घोड़े बांटे उस काल बिकटखांसे राजानेकहा, कि तुमभी शस्त्र शालासे हथियार, और घुड़साल से घोड़ा अपना मनमानतालेलो· कल तुम्हेंभी हमारेसाथ लड़नेकोचलनाहोगा, इस बातके सुनतेही उसकाजी तो सूखगया; पर मोरलाजके बहुत अच्छा कह घोड़ा और हथियार चुन

ले· किसी छलसे वह अपने घरआया, और जोरूसे कहने लगा· कि इसनगरसे अभी भागचलो· नहीं तो राजाके साथ कल मरनेको जानाहोगा· उसकी जोरू बुद्धिवती थी, जो लड़ाई मेंजाताहै, सो बिनकाल नहीं मरता· यहकह उसने चक्कीमेंचने दलकर दिखाये, और कहा, कि देख· जिसभांति इस मेंदाने समूचे रहगएहैं, तैसेही लड़ाई में भीलोगबच रहतेहैं, बोला, जो पिसगया, सोमैं हूं, इसहेठापन कोदेख उसकी स्त्री झुंझलाकरबोली· कि सुन जो तू ऐसे प्रभुके कृतघ्नहो उसका साथ छोड़ेगा तो मैंभी तेरा साथनदूंगी· यह सुनलजाय, निरुत्तरहो, राजाके पास भोरही जाउपस्थितहुआ· और हथियारलगा, घोड़े पर चढ़ उनके साथहो लिया; जिस काल खेतमें दोनोंदलतुलकर लड़नेको खड़े हुए, और लगामारू बजने, औरगोलीगोला बान दोनों ओरसे चलने· और इस काघोड़ा भड़कने· तिससमय बिकटखांने तो मोरडुरके राजासे निवेदनकिया· कि महाराज! हों गिरतुहों· पर राजा समझा, कि यह कहताहै, मैं शत्रुके दलपैं गिरूं, बोले, ऐसाकाम भीन कीजो· तुममेरे हाथीके साथ अपना घोड़ारकखो· दोतीन बार राजासे उसनेकहा, और राजाने यहीउत्तर दिया· निदान घोड़ा उसे वैरीके दलमें लेहीगया; तब बिकटखांने कटिसे दुपट्टा खोल फिराया; इस से उसराजाके लोग लड़नेसे अड़ रहे, और इसके पास आएकहा, तू क्या संदेशालायाहै; बोला मुझे घोड़े सेउतारोतो कुछ निवेदनकरूं· उन्होंने इसेघोड़े से उतारा, तद यहबोला· कि तुम किसलिये लड़ोहो; जिस प्रकारका व्यौहार चाहोगे सोहमारा राजा मानलेगा· उसने कहा· कि दसलाख रुपयादे, और अपनी बेटी· हमारे बेटे को व्याहदे, हम यही चाहतेहैं· वह बोला, यह बात हमारेराजाको स्वीकारहै, मैं इसकाउत्तर कलदे जाऊंगा· तुम निचिंतरहो, इसबातके सुन्तेही प्रसन्नहोउस राजानेइसे एकभारी खिलत और बहुतसे रुपये दे विदाकिया· और लड़ाई मौकूफ़की, दूसरे दिन भोरही यह राजाजब चढ़ खड़ा खड़ा हुआ,

तब उस राजाने कहलाभेजा, कि कल तो तुम्हारा बसीठ तुम्हारे ओरसे दस लाख रुपये और बेटी देनी अंगीकार करगयाहै, अब क्यों लड़नेको खड़े हुएहो; सुनतेही राजाने आज्ञा की, कि देखो कौन हमारी ओरसे वहां जाकर यह बात कह आयाहै; उसे मेरे पासलाओ. निदान निश्चय करके लोग बिकटरांको हाथोंहाथ राजाके सोंही लेगए. तब किसी मंत्रीने उनसेपूछा कि तू किसकी आज्ञासे दसलाख रुपये और लड़की देनेकी मनौतीकर आया; बोला, इसे आज्ञा क्याचाहिये, जोइस घोड़े पर चढ़ेगा, सो मनौतीही करआवेगा. इसबातके सुनतेही राजाने क्रोधकर उसे निकालदिया. इसमें कोई मंत्री बोल उठा, कि महाराज! आपने जो इतना पछतावा किया, सो क्या यह कहावत नहीं सुनी; कि, जिसकाकाम उसीको छाजे, और करे तो ठेंगा बाजे.

कहानी ६५

एक जनाकी भैंस मरगई, वह लगा रोने. इसमें उसके एक पड़ोसीने आकर पूछा. कि भाई! तुमक्यों रोतेहो; बोला, मेरी भैंस मरगई जो सोरुपये को पालती थी. यह बोला, भाई! धीरज धरो. हमें तुम्हें काले धनसे लड़ना नहीं. उसने पूछा, तुम्हारा क्याटोटाहुआ; उत्तर दिया. मेरे भीखाना पकाने की हांडी फूटगई. इस बातके सुनतेही वह विचारा हँसकर बोला, कि भाई! सचकहतेहो.

कहानी ६६

एक दिन तुलसीदास गोसांई बनारस में किसी ठौर पर बैठेथे. कि एक रूखड़ फ़क़ीर ने आकर कहा, अलख, इसके उत्तर में तुलसीदासने यह दोहा कह सुनाया ॥ हमें लखब हमारलख हम हमार के बीच, तुलसी अलख को कहा लखै राम नाम भज नीच.

इस दोहे को सुन वह मोरलाजके निरुत्तर हो चुपचाप चलागया.

कहानी ६७

किसी नगरके अमीरका बाप मरगया; वह उसके सोगमें बहुत दुःखित बैठा था. नगरके सब लोग क्या गृहस्थी क्या उदासी क्या हिन्दू क्या मुसलमान मिलकर उसके यहां स्यापेको गये, और बैठकर चले आये; पर चारजना उसकी अधीरता देख उनमेंसे बैठरहे. बेनवा, और बैरागी, संन्यासी, और जोगी, और हरएक अलग अलग प्रकारकी कहावत कह चले आये॥

बेनवानें यह कहावत कही. दोहा!

दीद दुनियाका दम बदम कीजे, किस किसे यादी और किस किस को याद कीजे

बैरागीने यह

साधो या संसारमें सभी बटाऊ लोग, काको कौं मनावनो काको कीजै सोग

संन्यासीने यह

आये हैं सो जायंगे राजा रंक फ़कीर, एक सिंघासन चढ़ चले दूजे बांधे जात जंजीर.

जोगीने यह

जोगी था सो उठ गया, आसन रही भभूत

कहानी ६८

शाहजहां बादशाहके यहां कई एक पोलियों ने मिलकर किसीके कहे सुनेसे अर्ज़ी दी, कि धर्मावतार! आपके राज में हम भूखे मरते हैं, और सब चैन करते हैं; महाराज से खाने रहने का ठिकाना होजाय तो हमारा जीव बचे. अर्ज़ी के पढ़तेही शाहने मंत्रीसे कहा, कि पोलियों के खाने रहने का सेंताव अभी करदो कि ये बिचारे किसी बात का दुख न पावें. आज्ञा पातेही पोलीने खान बनवाया, मंत्रीने सब पोलियोंको नगरके वहां रहने को ठाम दे, उनका दर्माहा कर दिया. यह समाचार सुन, सब नगरके आलसी, कामचोर, काहिल, बिनपरिश्रम के रुपये लेने की लालच से वहां आय आय. पोलियों में नाम लिखवाय लिखवाय, रहने लगे. निदान एक बरसके बीच कई हज़ार पोली

गिनेगये; तबपोस्तीखानेकेदरोग़ःनेमंत्रीसेजाकहा·कि महाराज! जो इसीप्रकारसेदर्माह्वा मिलाजायगा, तो समझपड़ताहै· कि कई बरसमें सारानगरपोस्ती होजायगा; एकही बरस में कई हज़ार डूकड़े हुएहैं· मंत्री नेजा बादशाह को संदेसा पहुँचाया·बादशाहने आज्ञाकी, कि इसेविचार करकेदेखो जोठीक पोस्तीहै, बिसे रहनेदो·और जोभगालियाहै, विसे निकालदो·यहआज्ञा पातेही मंत्रीने घरजाय सबको न्योता किया· और बहुतसापोस्त पिलाया; जब अच्छीभांति माते, तबउन्हें खानेको मिठाईदी·और यहकहा, कि जो कोई खाने की बिरियां देहमें हाथन लगावेगा, सो हज़ार रुपये पावेगा·और जो अपना शरीर खुजलावे, सो नहीं, निदान मिठाई खाते उनके देहमें खुजलावट हुई, तबभगालियों ने तो सारे लोभके न खुजलाया·पर ठीक पोस्ती यहकह खुजलानेलगे, कि इसके एक एक थिस्से पर हज़ार हज़ार रुपये निछावरहैं; मंत्रीने उसी खिन खिनखुजलानेवालोंको विदा किया, और खुजलाने वालोंका दर्माह्वा न किया·

कहानी ६९

एक कड़ोड़ पती बड़ा कृपिन था·उसके घरमें कुछ बधाई आई! तो उसने अपने रसोइये और मोदियोंको बुलाकर कहा, कि एक सेरकी सोलह रोटी पकाओ, और दो आदमीके आगे एक रखो· इसमें खावे सो खावे, बचे सो बाँधलेजावे, कभी किसीको न बर्जी·वे बोले बहुतअच्छा·यह बात सुनकर कोई उनका चिनहारी बोला, कि भाईजी! यह व्याह कैलूटालूट; उत्तरदिया, बंदेये दर्गाह जबकरतेहैं तब लूटालूटहीकरतेहैं; तुमने यह कहावत नहीं सुनीहै; क्यालेगये शेरशाह? क्यालेगये सलेमशाह; दुनियां सबकी और सूमका नामही रहजाताहै;

कहानी ७०

मुफ़्त बिराने मालके खानेवाले दिल्लीके बाँके प्रसिद्धहैं, एकदिनको ई बाँका किसी हलवाईकी दूकानके मांहीं जा खड़ाहुआ, और लगा

उस की मिठाई की ओर आंखैं फाड़फाड़ देखने वह बोला, देखते क्या होजी; इसने एकमिठाई की ओर सैनकर के पूछा, यह क्याहै उसने कहा, खाजा, इतनी बातके सुन्तेही, यह झट चाल उठा, उसकी सब मिठाई खा गया और लगा कुछ रोकड़ मांगने, और कहने कि मैंने तेरा कहना पूरा किया इसकी मजूरी मुझेदे निदान धमका धनकूके उसने एकरुपया लेही के छोड़ा; तब कई एक आदमियोंने आके हलवाई से पूछा किअजी! यह क्या बात थी; कहतो सही बोला, महाराज! कहूं क्या अप्रा मिर; यह वही कहावत है जो कानो सुन्ते थे सो आंखों देखी कि, उलटा चोर कुतवाल डाँड़े

कहानी ७१

एक गोसांई अपने चेले को साथले किसी नगर से तीरथ करने को निकला, और चलाचला एकगांवमें पहुँचा तब उसने चेले के हाथ हाट से कुछ खाने पीने का द्रव्यमँगवाया चेला जो हाटमें जाके देखेतो सब वस्तु एकही भाव है; वहमोर आनन्दके घी चीनी मैदा ले आया और मलीदा बना तुरन्त गुरुके आगे लाधरा गुरुने पूछा, कि बाबा! आजक्या है जो तूने चूर्मा बनाया बोला, कि महाराज यहांसब वस्तु एकही भाव है, इसलियेमैंने मलीदाही किया यह सुन गोसांई ने चेले से पूछा, इस गांवका नामक्याहै; बोला हरिभूमपुर कहा यहांसे अभी चलो नहीं तो क्याजानिये किस आपदामें पड़ें; चेलेने उत्तर दिया, मैंतो इसनगर से न जाऊँगा आपकाजीचाहे तो तीरथ यात्रा कर आइये, निदान गोसांई अकेला गया, और चेला वहां रहा, बरस एकमें वहरवापीके ऐसा मोटा हुआ कि पहचानानजाता था एक दिन कोई चोर चोरी करते पकड़ा गया; राजाके यहांसे उसे सूलीदेने की आज्ञाहुई कुतवाल उसचोर को सूलीके पासले जाकर क्यादेखताहै, कि चोरदुबला, और सूली मोटी है यह समाचार राजासे जाकहा; राजाने आज्ञाकी, कि किसी मोटे को पकड़ कर सूलीदो और चोरको छोड़दो राजाकी आज्ञाहोते

ही कुतवाल उस गोसाईं के चेले को सबसे मोटा देख, पकड़कर सूली के पास लेगया. और चाहे कि उसे सूली पर चढ़ावे, कि इसमें परमेश्वर का चाहा वह गोसांईभी वहां आपहुंचा. और अपने चेले को सूली दिते देख बोला, ओ बाबा कुतवाल! तू इसे सूली न दे, इसके बदले मुझे दे. कुतवाल ने पूछा, क्यों? गोसांईने कहा, इस सूलीपर जो चढ़ेगा. सो स्वर्ग का राजा होगा. इसी दिन के लिये मैं बारह बरस के बैस से जोग कमाता था, सो दिन भगवान ने आज दिखाया, और मेरा मनोरथ पूरा किया. कुतवाल बोला, तुझे क्यों सूली दूंगा; मैंही इस सूली पर चढ़ूंगा. कुतवाल के सूली चढ़ने का संदेस: पाकर सूबा ने कहा, तू न चढ़ मैं चढ़ूंगा. सूबे का समाचार पाकर दीवान ने कहा, मैं चढ़ूंगा. निदान इसी भांति वादानुवाद करते वहां का राजाही सूलीपर चढ़ मरगया. तब उस गोसांईने चेले से कहा. क्यों तुझे न कहताथा, कि इहां न रह, अबभी रहेगा? बोला, महाराज! मेरी वही कहावत है, कि भूले बनिये भेड़ खाई, फेर खाय तो रामदुहाई. यह कह. वह उसी समय गुरु के साथ वहां से निकलखड़ा हुआ.

कहानी ७२

एक सिपाही लिखापढ़ा संसार के विषय से रूठकर उदासी होगया, और लगा देशदेश फिरने. किसी नगर के पौर की ऊपरली चौखट में कुछ लिखा था, सो लगा बांचने. इस में उसने एक कोने में लिखादेखा कि. हिम्मति मंदी मदद खुदा. इस बचन के पढ़तेही क्रोध कर बोला, कि जिस नगर के पौर पर यह झूठ लिखाहै, उसके भीतर न जानिये क्या कुछ होगा. यह कह नगर में न जा, उलटा फिरा, और किल्ली एक दूर जा आपही आप सोचा, कि मैंने बिना परखाये किसी के लिखे को झूठ कहा, यह बड़ा अन्याव किया. इतना समझ फेर फिरा. और यह इच्छाकर, चटाई बिछा, उसी पौर में जा बैठा. कि इस नगर के राजा की बेटी को मैं ब्याहूंगा. इसमें उसे वहां तीन दिन बिन अन्न जल बीते, बीच इसके उसने न किसू से वा

न कही, न कुछ खाया, बरन नगरके लोगोंने खिलाने पिलानेकी बहुतचेष्टा की, पर इसने उन्हें उत्तरही न दिया, यह समाचार वहांके राजा को पहुंचा; राजाने मंत्री कोबुलाके आज्ञाकी. कि इसी विरियांतू जाके उदासी कोजोमांगे सोदेकर, खिलापिला, बिदाकरआ. राजाके कहतेही मंत्रीने उदासीसेजाके कहा. कि सांईजी! महाराजकी आज्ञा मुझेयोंहै. कि जो फ़क़ीरकीइच्छाहो सो पूरी करआ. जोआपको चाहिये सो आज्ञा कीजे. मैंलाउपस्थितकरूं, फ़क़ीरने कहा, मैं राजाकी बेटीसे ब्याह करूंगा, मुझेलादे. बिनाइसके मुझेऔर कुछ नहींचाहिये; इसबातके सुनतेही मंत्री निरुत्तरहो, फिरकर राजाके पास पहुंचा. राजाने कहा, क्यों; फ़क़ीरको बिदाकर आया, मंत्रीने निवेदन किया. पृथ्वीनाथ! जो फ़क़ीरने बात कहीहै, सोमैं मुंहपरला नहींसक्ता महाराजनेकहा, कि लिखकरदे. इसने उनकी आज्ञासे उसकाकहना लिखदिया; राजाने सोच समझके कहा, कि कुछचिंतानहीं; उसेकहो, सवासेर अन बींधे मोती लेआ. तेरा ब्याह राजकन्यासेहोगा; राजाओंके यहां यहरीतिहै. कि सवासेर अन बींधे मोतियों से स्वामीदुलहन की गोदभरे. मंत्रीने फिरजा, फ़क़ीरसे राजाकी कही बात कही. यह बहुत अच्छाकह, चटाई बँधना बांध, मोती लेने समंदरकी ओरगया. और मंत्रीराजाके पास आया; उसकाल राजाने कहा, जो यह फ़क़ीर सिद्धहोगा. तो मोतीलावेगा. नहीं आपही चलाजादेगा; और जो महापुरुषहै तो उसे बेटी देनेमें कुछलाज नहीं; क्यों कि जिसका पदहम सेबड़ाहै. वह जिसे चाहे बातकी बातमें राजदे डाले. निदान वह फ़क़ीर समंदरके तीर पहुंचा. करि बांध, बँधनाहाथमेंले, लगा पानी उलीचने. जब तीनदिन रात उलीचते उलीचते उसे चौबीस पहर बीते. तब समंदरने मनुष्यकास्वरूपबन, आनके पूछा, कि फ़क़ीर तूक्यों समंदर का पानी निकाल निकाल फेंकताहै; बोला, पानी उलीच के सवासेर मो-

तीलूंगा उत्तर दिया तुझे सवासेर मोती मिलें, तबतो पानी नहीं उलीचेगा; कहा नहीं बोला आंख मूंद मैं तुझे मोती देताहूं इसने आंख मूंदी, उसने बड़ेही बड़े बड़े मोती लाइसके हाथ दिये; यहले, अरी मर, फिर उसी पौर में आ बैठा राजा को समाचार हुआ; राजाने मंत्री को भेज उसे महाराज के सोंही बुलाया और आदरमान कर गद्दी पर बिठाया निदान जब राजकन्या को ला उस के सोंही खड़ा किया, तो फ़क़ीर ने मोती की पोटली झोली से निकाल इन्हा कहा, उसके हाथ दी, कि मैना! ले, इसबातके सुन्नेही राजा ने दांतों में उंगली दे कहा, सांई जी! तुम्ने क्या कहा, बोला, बाबा सच कहा, फिर राजाने पूछा, कि तुम्हारी कामना क्या थी; उत्तर दिया बाबा! प्रश्न उत्तर कुछ न था फ़क़ीर को एक बात का जांचना था सो किया; तेरे नगर के पौर पर लिखा है कि हिम्मति मर्दी मदद ख़ुदा, सो फ़क़ीर की समझमें झूठ आया था, सो नहीं किसी ने सच लिखा है; इतना कह वह फ़क़ीर वहां से चला गया।

कहानी ७५

एक कायथने गाने बजाने के संसर्गमें किसी गवैये से यह कविता सुनी इश्क क्या शै है किसी कामिल से पूंछा चाहिये; तभी से वह सिद्ध के ढूंढ ढांढ में था कि एक गो सांई इसे मिला इन्ने दंडवत कर उस से पूंछा, कि महाराज! इश्क क्या वस्तु है, मुझे दया कर बताइये इस की बात सुन, उसने कहा बाबा! मैंने तो अपने गुरु गुरुदेव के मुख से यों सुना है, इश्क उसी की झलक है जो सूरज की धूप जहां दृश्य तहां आप है क़ादिर नादिर रूप।

कहानी ७६

एक दिन आलमगीर बादशाह को किसीने अर्ज़ी दी, कि पृथ्वीनाथ! आप के राज में दलाल दिन दोले बीच बाज़ार के प्रजा को लूटते हैं माल किसी का ले कोई बेचने में दो आने रुपया लेते हैं अर्ज़ी के

पढ़तेही, बादशाहने सारे नगरके दल्लालों को पकड़वा मँगाया, और पूछा, कि तुम किस बातकी कौड़ी खातेहो; निवेदन किया, कि पृथ्वीनाथ! बाज़ारमें कोई वस्तु आवे, पहलेहम उसका मोल तोल करेते हैं, तबगाहक लेतेहैं; इसीबात की कमाई खातेहैं. बादशाहने आज्ञा की, हमारा मोल तोल करो तो भला नहीं तो सबको नगरसे निकालदूंगा. इतनी बातके सुनतेही उनमें जो चौधरी था, सो बांटकाटा ले आगे बढ़बैठा. और लगा इधरउधर निकतीमें बांटडाल तोलने. इस में कुछ गौन जोहुआ, तो बादशाहने कहा, कहता क्यों नहीं; घड़ी घड़ी तोलना क्याहै, उसनेहाथ बांध, खड़ेहो, उत्तरदिया, कि धर्मावतार! आप तोलमें तो जितने सब मनुषहैं तितनेहीहो. परमोल मैं नहीं कह सक्ता; क्यों कि एक रती मुझे नहीं मिलती; जो रत्तीहाथ लगती तो वह भी कहदेता. इस हंसके सुनतेही बादशाहने उन सब को पान दे यह कह छोड़ दिया. कि दल्लाली खाना तुम्हारा यथार्थहै. आनंदसे खाओ; अर्ज़ीदेनेवाले को निकाल दिया.

कहानी २५

एक मथुरा का चौबे कहीं बैलपर चढ़ पूरियांखाता चलाजाता था. किसी कानकुब्ज पंडितने देखकर हंसे पूछा कि चौबेजी! तुम जो चौके में न बैठ बैलपर बैठ पूरियां खातेजातेहो सोइसकाप्रमाण क्याहै; उत्तरदिया; कि प्रसिद्ध कौं प्रमान कछु नाहीं चाहियत; बोला, सो क्या; उसने कहा. कि चौका याही के मार्गसों निकस्योहै. इस बातके सुनतेही वह पंडित हंसकर रह गया.

कहानी २६

एक सिपाही बड़ा ज्वारी था; जब जीतता, तब मारे आनंदके ऐसा अज्ञान हो जाता. कि कोई उसके पहरने के कपड़े उतार लेता, तौभी उसे न जान पड़ता; इसी आंससे दस पांच लुच्चे हर घड़ी उसके साथ लगे

रहते· और जब सुभीता पाते, तब उसका माल उड़ाते· एक दिन वह किसी पराई ठाम जुआ खेलने को गया, और लगा जीत जीत रुपये अन्ने आगे से पीछे खिसकाने· और उसके साथ के लुच्चे लगे उड़ाने· इसमें किसीने देख कर एक से कहा, कि देखो किसी की कौड़ी कोई उड़ावे· दूसरे ने उत्तर दिया, क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी, जो अचरज करते हो; अंधी पीसे कुत्ता खाय, पापी का माल अकारथ जाय·

कहानी ७७

शाहजहां बादशाह ने दीवानखास से ले गढ़ के पौर तक रस्सा बंधवा दिया था, और उसमें घंटालियां गूंथ वा छोर उसका बीच बाज़ार में डलवा दिया था, इसलिये कि जो कोई बादी आवे, सो उस रस्से को खैंचे, घंटालियां बाजें, और बादी की पुकार महाराज के निकट बिनबीच बचाव के पहुंचे· एकदिन किसी भिश्ती का बैल भरी खाल समेत उस रस्से के पास आनकर खड़ा हुआ; भिश्ती किसी के यहां मशक डाल्ने गया था; बैल ने रस्से में सिर खुजलाया; उसके सींग का झटका जो लगा, एकी दांव सब घंटालियां बाज उठीं; सुनतेही बादशाह ने कहा, देखो, को नहै; लोगों ने झट समाचार दिया· धर्मावतार! और तो कोई नहीं, एक भिश्ती का बैल है· आज्ञा की, कि उसे उसके स्वामी समेत ले आओ· लोग वोहीं ले गए· बादशाह ने आज्ञा की कि इस की पखाल का पानी तो लो कि कितना है, तोलकर निवेदन किया कि पृथ्वीनाथ! साढ़े पांच मन है, सुन्तेही बादशाह ने आज्ञा की कि आज से साढ़े तीन मन पानी से अधिक नगर में कोई पखाल न बनावे· उसी घड़ी डोंडी फिर गई, तभी से साढ़े तीन मन पानी से अधिक पखाल नहीं बनती·

कहानी ७८

दो दिल्ली के बांके बिगने माल के खाने उड़ाने वाले किसी स्थान से यह बिचार करके उठे, कि आज बाज़ार में चलकर बिन कौड़ी पैसे मुफ़्त की मिठाई खाया चाहिये; और आगे पीछे हो बाज़ार में पहुंचे· एक तो

जातेही रुपये की मिठाई तुलवा लगा हलवाई की दूकान पर बैठ खाने; और दूसरेने उसी हलवाई से आठ आने की मिठाई, और अधेली के पैसे ले अपी बाट ली। हलवाईने टोहकर उसका कपड़ा पकड़ा, और कहा, मेरा रुपया दो, वह बोला, मैं देचुका हूं, इसमें दोनोंसे झगड़ा होनेलगा, और बहुत से लोग इकट्ठे होगए, तब उस बांकेने कहा, कि मैंने एक भले मानुष के देखते इसे रुपया दियाहै, न माने चलकर पछवादूं, लोगोंने कहा, अच्छा तो कहताहै, तू दूकान पर क्यों नहीं लेजाता है; लोगोंके कहने सुन्ने से हलवाईने दूकान पर जा, उस मिठाई खाने वाले से पूछा, कि अजी! आप सच कहिये, इसने मुझे रुपया कब दियाहै; वह बोला, अबे! इन्होंने रुपया मेरे देखते दियाहै; पर कहीं मेरा रुपया न भूल जैयो, यह कह वे दोनों उसे निर्बोध बना, मिठाई खा चले गए, और वह बिचारा रोझीक कर बैठ रहा।

कहानी ७९

किसी दिन तुलसीदास गोसांई किसी एक लोगोंके बीच कहीं बैठ ज्ञान चर्चा करते थे, इसमें उस बाट से किसी की बरात आनिकली, उसके बाजे का शब्द सुन सबके मन द्रवित हुए; तब तुलसीदास हंसे, उनको हंसता देख, बिनमें से किसीने पूंछा, महाराज! आपका देखकर हंसे? उत्तर दिया, संसार की भूल देखके, बोला, सो क्या; उत्तर दिया; फूले फूले फिरते हैं आज हमारो ब्याह, तुलसी गाय बजाय के देत काठ में पाय।

कहानी ८०

एक बड़ा महाजन किसी सिद्ध उदासी के यहां जाकर गुरु मुख हुआ, और गुरु की सेवामें आठों पहर उपस्थित रहने लगा, परमेश्वर का चाहा छः महीने के बीच उसका ऐसा काम बिगड़ा, कि खाने पीने को भी कुछ पास न रहा, एक दिन गुरु ने इसे उदास देख कहा, कि बाबा! तूने यह कहावत नहीं सुनी, जो इतना सोच करताहै; अल्लह दाद कर्ता की बातें, क्या

न करंता क्या न करे; हाथी मार गर्द मेंडाले, अदना के सिर छत्र धरे, रीती भरे भरे ढुलकावे, मिहर के तो फेर भरे·

कहानी८१

एक दिन अकबरशाह के सामे किसी मुग़ल ने प्रस्ताव के प्रकार से राजा टोडल मल से पूछा, कि राजाजी! तुम्हारे यहां मल शब्द के क्या अर्थ हैं; वोंही समझकर राजा ने उत्तर दिया, कि मिर्ज़ा साहेब! जो केा शब्द के अर्थ हैं, सोई मल के हैं· इतनी बात के सुन्नेही मुग़ल बहुत लज्जित हुआ, अभिप्राय इसका यह है, कि संस्कृत में ये दोनों नाम गूहीके हैं·

कहानी८२

किसी ठौर पर कोई मुल्ला बैठ लड़के पढ़ाता था, कि एक लड़के के बाप ने आकर उसे उलहना दिया· मियां साहिब! मेरे बेटे को आपने कुछ न सिखाया, पढ़ाया; देखो, अबतक छोकरों के साथ वह खेल्ता फिरता है· और मेरा कहा नहीं मानता· इतनी बात के सुन्नेही मियां जी रिसकर बोला कि हांजी, नेकी बर्बाद गुनह लाज़िम· मैंने एक बरस परिश्रम कर, लिखा पढ़ा गधे से मनुष बनाया, और तुमने यह बात कही, अब मुझे तुमसे कुछ लेने पाने की आस न रही, यह निरास की बात सुनकर लड़के का बाप तो मियां जी को बहुत सा भरोसा देके चला गया; पर एक धोबी और धोबिन बड़े धनी, जिन्होंने मियां जी के मुंह यह बात गौल में खड़े होके सुनी थी, कि मैंने तुम्हारे लड़के को बरस दिनमें लिखा पढ़ाके गधे से मनुष किया· वे दोनों स्त्री पुरुष आ उपस्थित हुए· और हाथ बांधकर बोले, कि मियां जी! जितने रुपये चाहिये लीजिये· और मेरे गधे को मनुष बना दीजे, मुल्ला ने इन दोनों की बात सुनके मनमें विचारा· कि ये हिये के अंधे· मन के हीन गांउके पूरे, मेरे भाग से यह आन मिले हैं, इनसे रुपये क्यों नहीं लेता; यह समझ उन्ने उससे कहा, सहस्र रुपये दो· और गधे को बांध जाओ, इस बात के सुन्नेही, वे झट तोड़ा दे गधा बांध गये; और एक बरस पीछे कि

रश्रानउपास्थितहुए। उनके देखतेही मियांजीनेकहा, कि दो दिन आगे आते तोउसेपाते, अब तो वहजाके जौनपुरका क़ाज़ी हुआ। उन्होंने पूछा कि अब हम उसे क्योंकर पावें। मियांजीनेकहा, कि तुमउसके बाँधने की रस्सी और दाना खानेका नँदोला लेजाके सोहीं खड़ेहो दिखलाओ; जबवहपहचानके तुम्हें पासबुलावे तबतुम निराले ले जाके सबवृत्तांत कहियो। अप्राव्योरा सुनकरवह तुम्हें बहुतेराडरावेगा पर तुम नडरियो और कहियो, जो तुमहमारी बात न मानो, तो चलकर मियांजी से पूछ लो, निदानवेदोनोंजौनपुरगये और उसी भांति कहनेलगे; तबक़ाज़ी ने इनदोनों कोपासबुलाकर पूछा। कि तुम यहक्याकर्तेहो; बोले, निराले चलोतो सब वृत्तांत कहैं। क़ाज़ी उन्हें निराले लेगये; फिरउन्होंने सब वृत्तांत कह सुनाया। क़ाज़ी समझा, किसीने इन्हें बहकायाहै। इस से इनकी बात बिनमाने किसी भांति मेरापीछा न छोड़ेंगे। यों समझ क़ाज़ी ने कहा, जोतुमने कहा सो सबसच्च; पर अबतुमहमसेक्याचाहते हो; ये बोले, हम अपुत्रकहैं हमारेधन संपत का मीराहोके मरने से मिट्टी दीजो, यहीहम चाहतेहैं। निदान मारेलानेके क़ाज़ीने उन की बात मानली। इस लिये कि कोई और न सुने।

कहानी ८३

एक क्षत्री संसार से उदास होके किसी नानक पंथी फ़क़ीर का जाके चेलाहुआ, कित्ने एक दिन पीछे, एक दिवस उसने गुरुसे कहा, कि महाराज! मेराजी चाहताहै, जो आपकी आज्ञापाऊं तो पृथ्वी प्रदक्षिणा कर आऊं। गुरुनेकहा, बहुतअच्छा, इत्नी बातके सुन्तेही, वह दंडवतकर बिदाहुआ और लगादेशदेश फिर्ने, जिसदेशमेंगया, वहां उसने प्रतिदेश का मनुष देखा। तो दंगाहुआ; निदान कित्ने महीनेमें फिरकर गुरुके पासआया। और चकित होपूछा। कि महाराज! यह क्या आश्चर्य है, कि एकदेश में मनुष जनमें, और दूसरेमें जा

बमे; गुरु बोला, बाबा! तू जो इतना अचंभा करता है सोक्यातूने यह दोहा नहीं सुना; कित काशी कित काश्मीर खुरासान गुजरात, परसराम याजीव को पगलबधने जात.

कहानी ८४

किसी ठामके बीच पांच सात सिपाही आपस में डींग मारते थे. कोई कहता था मैंने चार घाव खाये; और कोई कहता था, कि पांच, निदान हर एक ने अपने अपने लड़ने और चोट खाने का वृत्तांत बखान किया, एक बूढ़ा ठठोल उनके पास बैठा था, बोला, कि अजी! जोवनमें हम भी सैंकड़ों लड़ाइयां लड़े, और हमने भी हज़ारों चोट खाये ऐसेकि कहीं तिलधरने की ठौर देह में नहीं रही; हमारे आगे अब क्या कोई लड़ेगा. और क्या चोट खायगा; इतनी बात के सुन्तेही, उन मेंसे एकजनारोस कर बोला, बड़े मियां! कपड़े उतारो देखें. तुमने कहां कहां घाव घायेहैं; वह हंसके बोला, मियांगबरू! न वह काल रहा; न वे दिन रहे; न वह जोबन रहा; न वह बनावट रही; न वह शरीरही रहा, अब क्या देखोगे; इतना कह चंपत हुआ.

कहानी ८५

किसी मुन्शी के पास एकबाहर का सैयद चाकर हुआ. एक दिन उसका खिदमतगार उपस्थित न था; उसने इससे कहा, कि आज मेरा टहलुवा उपस्थित नहीं है, तुममेरे साथ दर्बार चलो. कहा बहुत अच्छा. इसने उसे चार पैसे देके कहा, कि सारे दिन दर्बार में रहना होयगा, तुमइनके पानलेके चार गिलौरीलगवा लाओ; जब मैं सैनकरूं तब दो खीलीदीजो; मैं आगे जाताहूं तुम लेकर शीघ्र आओ; यह कह, वह तो दर्बारमें जा बैठा, और इसने अपने मनमें बिचारा, कि चार पैसे के पान से तो मियांका पेट न भरेगा, इस से भलाहै कि चार पैसे की चार रोटी ले चलूं. जो मियां पेट भर खायगा. यह मनमें ठान, चार पैसे की चार रोटी ले अंगोछे में बांध कांख में दबा, मियांके सोहीं जा खड़ा हुआ. मुन्शी ने इसे देखतेही जाँ

सेन कर हाथ बढ़ाया· तो उसने अंगोछे से दो रोटी खोल उसके हाथ दीं· यह देखतेही हक्का बक्का हो· लगा दूसरे की ओर देखने· उसके डौल बिगड़े देख यह बोला, भौंड़ी तरह दीदे फाड़ फाड़ देखै से के मैं नहीं खाई, दो और धरी हैं· यह सुन वह लज्जित हो· अपने मनमें कहनेलगा, कि किसीने सच कहा है, कि अनाड़ी का सौदा बारहबाट·

कहानी ८६

एक ज़मीदार के दो बेटे; पर उन दोनों में सदा अनबनाव रहता, एक एक को न देख सका· जब उनका बाप मरा तो वे दोनों आपस में लड़ने लगे· निदान बड़े भाई ने छोटे को ज़मीदारी से निरधिकारी कर मारके निकाल दिया, तब वह किसी और बड़े ज़मीदार को अपने बड़े भाई पर चढ़ा लाया· उसने आतेही खड़ी सवारी उसे मार लिया· और सारी ज़मीदारी को अपने हाथ में किया; जो चढ़ा लाया था· विसे कुछ खाने को कर दिया· यह वृत्तांत देख किसीने तुलसीदास गुसईं के आगे जाके, कहा, कि महाराज! संसार के सुखके लिये और कई दिनके भोगके हेतु· उसने भाई को मरवाया· और यहलोक और परलोक को गँवाया; इसमें उसके हाथ क्या आया; जब भाई भाई से यह व्योहार करे, तब दूसरे से कोई क्या भरोसा रखे; तुलसीदासजी बोले· कि इसका अचरज मत करो, ऐसे और भी ठौर कहा है; बधिक बध्यो मृग बानतें रुधिरो दियो बताय, अति हित अनहित हो नहै तुलसी दरसि पाय·

कहानी ८७

अकबर बादशाह के सामने एक दिन मियाँ तान सेन ने सूरदास का यह बिशन पद गाया; जसुदा दार बार यह भाषै, है कोई ब्रजमें हित हमारो चलत गोपालहि राखै· बादशाह ने इसके अर्थ पूछे; मियां ने कहा· जसुदा घड़ी घड़ी यह कहे है कि है कोई ब्रजमें मित्र हमारा जो चलते हुए गोपाल को राखे; मियां तो गाय बजाय चले गये; इसमें आये· बीरबल; महा-

राजने उनसे भी उसका अर्थ पूछा; बीरबल बोले धर्मावतार! बारबार कहते हैं पौरको, सो जसुदा पौर पौर यह कहती है; कि है कोई ब्रजमें मित्र हमारा जो गोपाल को न जानेदे; इतने में राजा टोडल मल आये; महाराजने उनसे भी अर्थ पूछा; कहा; एथ्वीनाथ! जसुदा कृष्ण की मा, बार कहते हैं पानी को, और द्वार को, सो पानीका द्वार कृआघाट; इससे अर्थ यह हुआ, कि जसुदा घाटघाट यह कहती है, कि है कोई ब्रजमें मित्र हमारा कि चक्केसे गोपाल को फेर रखे; इसबीच आये मुल्ला फ़ैज़ी; बादशाहने उनसे भी इसका अर्थ पूछा; उत्तर दिया! कि बार बमअ़नी आबओ दर; यहां आबसे मुराद है आँस और दरसे मुराद है आँख; इससे मअ़नेये निकले कि जसुदा रोकर यह बात कहती है, कि है कोई ब्रजमें दोस्त हमारा जो गोपाल कोन जानेदे; इसबीच आये नव्वाब ख़ानख़ाना; बादशाहने उनसे भी उसका अर्थ पूछा; तब नव्वाबने कहा, कि धर्मावतार! इस विशन पदका अर्थ किसी औरने भी कहा है, इस बातके सुन्तेही, जिस जिसने जो जो अर्थ कहेथे, महाराजने कह सुनाये; तब नव्वाबने कहा, महाराज! ये तो उस विशन पदके अर्थ नहीं, पर हां हर किसीने अपने मनका अनुभव बरवान किया; बादशाहने पूंछा, सो क्या; बोला, वह विचारा कलावंत जैसे एक मौम नौम शब्दों को घड़ी घड़ी कहताहै, उसके मनमें यही ध्यान बंधा, कि जसुदा घड़ी घड़ी कहतीहै, और बीरबल जातका ब्राह्मन पौर पौर का फिरने वाला, उसके भी मनमें यही ध्यान बंधा, कि जसुदा पौर पौर कहतीहै, और टोडल मल मुत्तसद्दी, उसके ध्यान में यह बूझ पड़ा, कि जसुदा घाट घाट कहतीहै, और फ़ैज़ी कवि, बिन रोनेके और अर्थ न सूझा, इस से उसके ध्यान में आया, कि जसुदा रो रो कहतीहै, यह बात सुनकर बादशाहने कहा, भला अब तुम कहो, उसका क्या अर्थ है; निवेदन किया, कि एथ्वीनाथ! बार कहते हैं, बालको, सो जसुदा का बाल बाल यह कहताहै, कि है कोई ब्रजमें मित्र हमारा जो गोपाल को न जानेदे, अर्थ के सुन्तेही बादशाह

ने प्रसन्न हो सब की प्रशंसा की· और ब्रजभाषा के विस्तार को बहुत सराहा·

कहानी ८८

किसी राजा की सभा में एक कवि जा के चुपचाप बैठ रहा; इसमें कोई राजसभा में से बोला, कि अजी क्या है जो कविजी! तुम मौन गहे बैठे हो; इसने उस की बात का उत्तर तो न दिया, पर यह दोहा पढ़ा, अति का भला न बरसना; अति की भली न धुप; अति का भला न बोलना, अति की भली न चुप; इसके सुनते ही, उसने भी इस दोहे को पढ़ सुनाया; कौन चहे है बरसना; कौन चहे है धुप; कौन चहे है बोलना; कौन चहे है चुप; फिर कवि ने यह दोहा कह सुनाया· माली चाहे बरसना; धोबी चाहे धुप; साहू जो चाहे बोलना चोर जो चाहे चुप;

कहानी ८९

कोई कायथ सदा अपने बेटे को समझाता, और यह कहता, कि बाबा! संसार बुरी ठौर है· करो तो डर, न करो तो भी डर· उस का बेटा सुनकर यह उत्तर देता, लालाजी! बुरी वेर के लिये है; करो तो डर न करो तो नडर· नित न जब तब उन दोनों में यही बात चीत होती· एक दिन उसने अपना वह घोड़ा असवारी को मंगवाया, कि जिस पर कभी न चढ़ा था· घोड़े के आते ही, बाप ने बेटे से कहा· बाबा! इस पर तुम चढ़ो, हम देखें· बेटे ने भी यही कहा, निदान बहुत सी कहा सुनी के पीछे उसका बाप ही असवार हुआ· और बेटा पीछे पीछे दौड़ता चला· इसमें कई एक जनों ने देखकर कहा, कि यह क्या अभागी है; कि गोद में पांव लटका चुका है· और तौभी इसकी चोप नहीं गई; जुवा बेटा पीछे टूटी चटका खाता है और आप घोड़े पर चढ़ा जाता है· यह सुन वह उतर पड़ा· और बेटे को चढ़ा· आप पीछे पीछे दौड़ता चला; फिर कई लोग देखके बोले कि देखो· यह क्या निकम्मा और कपूत है जो आप आराम से बाप को जिलों में दौड़ाता है· यह सुन आगे बढ़, वे दोनों चढ़ लिये, तब कोई बोल उठा कि ये क्या निर्लज्ज हैं· जो एक घोड़े

पड़ोसीनेंलूलियेहैं. योंसुनवे दोनेंउतरपड़े, और सर्दारने घोड़ाडुमियालिया. ये पीछे पीछे देखतेचले; तबइन्हेंदेख एकने एकसेकहा. किभाई! देखो हरामकामाल मुफ़्तमें जाताहै. और किसीकेकाम नहीं आता. इस बातके सुन्तेही कायथनेबेटेसेकहा. क्यों बाबा! लोगोंके मुखसे बचनेका कोई और उपाय हो तो करो. मुझसे तोअब कुछ नहीं बनआती. निरुत्तर होबेटा बोला, लालाजी! तुमसच कहते थे-संसारबुरीठौरहै. करतोडर, न करतोभीडर. इसका कुछ उपायनहीं.

कहानी ६०

एकजना अपने नगरसे खराब हो कर परनगरमेंगया. जातेही वहां उसने थोड़ेसे रुपयोंसे आढ़तकी दूकानकी; और ऋण करके उसने अपनी दूकान चमकाई, और बनज बढ़ाया, ऐसा किउसकी टक्करका उस नगरमें कोई दूकानदार न रहा. जो किसी बातमेंउसका सामना करे. दैवी पांच चार कामोंके बिलटनेमें उसका दिवाला निकला, और क़ैद पड़ा. निदान वहां हीं मरा. देनेसे छूट निकल न सका. तब किसीने इसकेबन्धे और बिगड़ कर मरनेका सब वृत्तांत जाकर एकमहाजन की सभामें कहा. सुनकर सभाकेलोग उसकी अवस्थापर बहुत पछतावा करने लगे. सभापतिबोला. तुमजो इतना पछतावा करते हो, सो क्या. तुमने कभी यह कहावत भी नहीं सुनी; कि संपति थोड़ी ऋण घना बैरी मेंका वास, नदी किनारेरूखड़ा जब तब होय बिनास. इसके सुन्तेही एकउनमेंसे बोल उठा. हांसाहजी! सच कहतेहो, यह वही कहावत हुई. किथोड़ी पूंजी खासमेंखाय.

कहानी ६१

एकबनिकपुत्र अपने बापदादेका धनउड़ा पड़ा. कंगाल हो, लगा दुखपाने; तबउसके मनमें आया. किपुरखोंने बनज कर पैसे बटोरेथे. भलाहै किमैंभी बनज करूं, परमेश्वर मुझे भी देगा. यह समझ हवेली

बेच-चार सहस्र रुपयेले,बनज को निकला, तोएक उसके बापका दास था-सोभी साथहोलिया-और चला चला किसी नगरमें पहुंचा-वहांबाजारमें देखे तो सब और वस्तु बिकतीहै-और एक ओर एक जना बिछौना बिछाये,और हुक्का लगाये; बैठा रहरह यहकहताहै, कि मैं बातबेचताहूं-जिसे प्रयोजनहो, मुझसेमोललेे-इसने उसकेपास जा,हज़ार रुपयेदे,कहा कि इन की बातहमेंदो-उसने तोड़ालेे कहा, कि जो छोटेसे बड़ाहो, विसे छोटा कभी न जानिये-इसनेकहा, और बोला, और रुपये दो-और लो फिर इसनेएक तोड़दिया,उसने कहा, किसी कादोष दखिये तो उस को छिपाइये,फिर इसनेकहा, और वहबोला, और रुपये दो-और लो-फिर इसनेहज़ार रुपये दिये-तब उसनेकहा-भूख लगी हुई हो, और कोई खानेको बुलावे-तो सहस्र काम छोड़ खाना खाइये-फिर इसने पूछा-और तब उसनेरुपयेले कहा-अमर्य्यादक प्रभुकी चाकरी कभी न करिये-निदानयह चार हज़ार रुपयेदे, चार बात ले,मलमेटहो, वहांरहा-और दैवी वहदास उसनगरका राजाहुआ-एक दिन वह राजा सिंहासन पर बैठा चलाजाता था-और वहबनिक पुत्र साबेबुरीदशामें,नंगे पाओं,तीन दिन के उपाससे देखपड़ा-देखते हीराजाने आज्ञाकी,कि इसकोमेरे न पहुंचते पहुंचते शीघ्र स्थानपर लाओ-लोगोंनेहाथोंहाथ लेजा उपस्थित किया-इसने दंडवत किया; तब राजाने पूछा, तू मुझेजानता है; सचकह-बोला, पृथ्वीनाथ! आपईश्वर तुल्यहैं, और देशकास्वामी-फिर राजाने दोबार पूछा, और इसने यहीउत्तर दिया-तबप्रसन्न हो, उसनेइसे अपना मंत्री किया-और सब राजका कर्ता-एक दिन रनवासमें राजाके पीछे पीछे चला जाताथा, कि इसनेदेखा, जो एक राजा की निज दासी नगर के कोतवाल को लिये, मद पिये-नींदमें अचेत पड़ी है-इसनेदेखतेही, कटिसे दुपट्टा खोल-उन दोनों पर डालदिया-राजा फिरकर मंदिर में पहुंचे, और यह बिदा हो अपने घर आया-इसमें

उनकी आंख खुली, तो तिन्होंने राजाका खाना, और मंत्रीका दुशाला उढ़ा
ना जाना; कोतवाल तो वहांसे निकल, मंत्री की डिवढ़ी पर जा उपस्थित हु
आ: और उस दुष्टाने कपड़े फाड़, बाल खसोट, धरती में लोट, राजा को बुला
के कहा. कि मंत्रीका यह साहस जो तुम्हारे रहते मुझ पर हाथ डाले और
अपमान करे! हाय! दुशाला मेरे हाथ रहगया, और वह भागकर निकल गया. राम दुहाई. पकड़ पाती तो बोटियां काट काट खाती. यह कह हाथका
टः पछाड़ खा धर्ती पर गिरी. उसका डौल देख, और बात सुन, राजाने रीस
कर मंत्री को बुला भेजा. जित्ते वह आवे, तितनेमें एक चिट्ठी फौजदार को
लिखी, कि जो जन चिट्ठी लिकर जाताहै, तिसका सिर तुरंत काटके भेज
दीजो. और इसमें कुछ मीन मेख हुआ, तो तुम्हारा सिर नहीं. मंत्रीके आतेही,
राजाने चिट्ठी देके कहा. कि तुम्हारा यह पद नहीं कि, चिट्ठी ले फौजदार के
यहां जाओ. परमुझे दूसरेकी पतीति नहीं. इसलिये तुम्हें भेजताहूं इस
चिट्ठी का उत्तर शीघ्र लाओ. वह जो चिट्ठी लेके चला तो मारग में किसीबड़े
आदमीने खाने को बुलाया. यह बोला, कामअवश्यकाहै, और
खाना उपस्थित. मैं क्या करूं? दैवी कोतवाल भी इन के साथ
था, अस्तुत करकेबोला, कि धर्मावतार! आप खाना खाइये, तबतक
मैं पांतीका उत्तर लादेताहूं. मंत्रीनेचिट्ठीउसकेहाथमें, और आप खाना खाया.
जो खाना खाकर उठा, तो थालीमेंकसाउसका सिर आन उपस्थित हु
आ; यहले महाराजके पास गया. राजाने इतना कहर नवास में भेज दिया,
कि जिसने तेरा अपमान किया, यह उसका सिरहै. ले. वहदेख, डर कर
चुपहो रही; फिर राजानेसब भेदकह कर मंत्रीसे पूछा, कि मैंने तो तेरा सि
र काटनेको लिखा था. यहक्याकारन. जो कोतवालका सिर कटा; मं
त्रीने जों का तों सबवृत्तांतकह सुनाया. और विदा मांगी, राजाने कहा,
यह कभी न होगा. कि अब तुम्हें विदा मिले, धरम मूरत! आपको स्म
रन है, जो मैंने चार बात बोल ली थीं. कहा. मुझे अच्छी भांति स्मरन

है, कहा. तीन तो परवाई, और चौथी यह है, कि अमर्य्यादक प्रभु की चाकरी कभी न करिये; इससे आपकुछन कहिये. मैं कभी न रहूंगा, इतनाकह मंत्री विदा हुआ. और राजा लज्जित हो चुप होरहा.

कहानी ६

तामस गिराम साहबको घोडोंकी बड़ी चाह थी. एक दिन एक ताज़ी मोल लिया; इसमें मुन्शी सदरुद्दीन ने भलाई के लिये कहा, कि इस घोड़े पर पंजाबी साईस रहे तो इसकी सेवा अच्छी भांति हो. यह बात सुन साहबने घुड़साल से साईसों के जमादार को बुलाके कहा, कि हमें एक पंजाबी साईस लादे; और भूलगये. बीस पचीस दिन पीछे. एक दिन साहब को वह बात स्मरनहुई; तिसे बुलाके पूछा, कि साईस मिलाकै नहीं; वह बोला. धर्मावतार! मैं ढूंढता हूं, अभी नहीं पाया. यह बात सुनके मुनश्रीने कहा, क्या दुष्टहै, एक महीनेसेटालमटोल करताहै, और साईस नहींलाता; बोला, महाराज! दुष्टके कहे का मैं बुरा नहींमानता, आपप्रभुहैं. जो जीमें आवे सो कहिये; पर प्रभुके सामने ठीक बात कहनेमें कुछदोष नहीं. अपराध क्षमाहो, ये मोलबीमुनश्री न होंय, जो एकके बुलाने से सौ आन उपस्थित होंय; येतोसाईसहैं; महीनोंके ढूंढढांढ़में एक आध मिलजाय तो मिलजाय, नहीं तो मिलना कठिन; यह सुन साहब हंसे, और उसमेंबार जो मौलबी मुनश्री उस समैं उपस्थित थे, लज्जित हुए. और मुनश्री सदरुद्दीनशर्माय चुपहो रहा.

कहानी ७

एक दिन दिल्ली के दो कंगाल सांझके समय बाज़ार में गये, तो उन्होंने देखा कि हलवाई मिठाई की थाली मुंहा मुंह भरी आगे धरे बैठाहै. ये उसके सामने जा खड़े हुए. और एकने एकसे कहा, कि इसे सूझ नहीं पड़ता. दूसरे ने दो उंगलियां उसकी आंख के सामने

कीं· वहबोला· यह क्या कर्तेहो; इसने कहा, हमनेजानाथा· कि तुझेदी· सता नहीं, और जो दीसता है, तो आगे धरी मिठाई किस लियेनहीं खा· ता; बोला, इसके खानेसे घर जाताहै· इतनी बातके सुन्तेही, वेठसकी सब मिठाई खा यहकह, चलेगये, कि तेरा घर रहे, भला हमारा हीघर जा· यगा; और वह बिचारा अपने कहनेसे आप लजाय कर रो कर बैठ रहा·

कहानी ६४

एक दिन राजा सवाई जै सिंह पंडितों की सभा किये बैठे थे· और शास्त्र चर्चा हो रही थी; इसमें कुछ प्रसंग जो आया तो राजाने सब की ओर फिर कर पूछा, कि पृथ्वीका मध्य भाग कहांहै, सो हमें बताओ· इस बातके सुन्तेही सब चुपरहे और किसी से कुछ उत्तर नबनि आया; तब एक चौबे बोल उठा, कि धर्मावतार जो आपमेरे साथ चलो तो हौं बताऊं· यह सुन राजा उ· ठ खड़े हुए, और बोले, कि चलो दिखाओ· वह भी सभा समेत राजा को लिये किसी जंगल में जा कुछ दूर उधर नाप· एक ठौर बड़ी गाड़ बोला, कि जहां यह सेल पड़ीहै, सोई धर्ती की बीचहै· राजाने कहा, हम कैसे मानें उत्तर दिया· याको कहा चाहिये न मानो तो मापलेउ· इसबात को सु· न, राजा और उनके साथके लोग निरुत्तर हो घर आये·

कहानी ६५

एक दिन कोई अफ़ीमी दो घड़ी दिन रहे, अफ़ीमका घोला चढ़ा· बा· ज़ारके भ्रमन को निकला· तो देखता क्याहै कि सोंही से भुस और कड़वी भरे छकड़ों का तांतों का तांता चला आताहै· उसे देख इतनाकह· वह किसी भलेमानसके किवाड़ेमेंभिड़कर खड़ा होरहा, कि बचादयो, बचादयो, साव धान· धक्कान लगे! इसमें पीनक जो आई· तो उसे वहीं खड़े खड़े पहर भर बीतगया· निदान जब घरवालेने हार खोला, तब वह पछाड़ खाके गिरा, और बोला कि इतनाकहा· बचादयो, बचादयो, पर गिरायेबिन रहा; किसीने सच कहाहै, कि सारवान गाड़ीवान मानन्दहयवानहै·

कहानी ६६

कोई बुद्धिवान भलामानस समयके फेरसे घरमें बैठा उपास कर रहा था कि यह संवाद सुन उसके किसी मित्रने आकर कहा, यह क्या अंधेर है; कि हाथ पांके काहिली मुंहमें मूंछे जांय; वहबोला, मैं क्या करूं; उन्नेकहा, बुद्धिवान लोगोंका वचनहै, कि नरपर जब विपत्ता पड़े तब विदेशजाय; इसीबातको मानों. निदान उसने मित्र की बात मान दूरदेश में गया, और कई बरसमें कई हज़ार रुपैये ले अपने घर आया. इसेमच्छन्द अवस्थामें देख, एकने एकसे कहा. किइस नगरमें तो यह भूखा मरता था, वाह रे जा वहांसे इतना धन ले आया जो धनवानहोगया; वहबोला, क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनी, जो दृष्ट्वा अचरज करैहो; पूछा, क्या; कहा, पात्र न पदारथ सुघड़नर अन तोलेहि बिकाय, जोंजों चढ़ें दिसावरां मोल महंगो जाय.

कहानी ६७

दिल्ली में किसी अफ़ीमीके छः लड़के थे, एक दिन वह तीन लड़कों को साथले हज़रत कुतुब के मेले को गया; वहां भीड़ भड़क्का देख, घबड़ाकर एक लड़केको कांधेपर चढ़ा, दूसरे को गोदमें ले, तीसरे का हाथ पकड़, अलग हो, जो एक ओर खड़ा हुआ, तो पीनकमें आया. फेर एक पीछे मेलेमें कुछ हुल्लड़ जो हुआ तो वह पीनकसे चौंक, कांधे के लड़के को न देख, बहुत घबराया. निदान यों कहता कहता कोतवाल के पास आया. कि हाय! मेरा लड़का खोयागया, कोतवालने पूछा; तुम्हारे कै लड़के हैं; बोला, छः उन में से एक खोया है. कोतवाल ने सुनके ढंढोरिये को उसके साथ कर दिया. वह सारा दिन उसे सारे नगर में लिये फिरा. निदान रोझींक, सांझके समें जो घरमें धसा, तो पीरकी चौखट लड़के के सिर में लगी; वह रोया. तब यह बोला, रे अभागा, अनहोनहार! सारे नगरमें खुवाकर मुझे रुलाकर जो तू

अबरोया, पहलेही क्यों न बोला· तो मैं इतना खराब नहोता; इसबात को सुन, किसी उसके चिनहारीने कहा, कि भई! जो कहावत हम सुनते थे सो तुम्ने सचकर दिखाई, कि बगलमें लड़का और शहर मेंढोरा·

कहानी ६८

शाहजहां बादशाहके शाहज़ादे दारा शिकोह को जोतिष विद्या से बड़ी चाह थी· नजूमी और जोतिषी सदा नौकर रहते; एक एक से बेर रखता· पर शाहज़ादे के डर से कोई किसी का कुछ कर न सक्ता· एकदि न अवसर पा, नजूमियोंने शाहज़ादे को सिखाया· कि धर्मावतार! इन जोतिषियोंसे पूंछिये, कि भौंचाल कब आवेगा; शाहज़ादेने सबको बुलाकर पूंछा, और कहा, कि यातो तुम भौंचाल का आना बताओ· नहीं तो मेरे नगरसें निकल जाओ, यह बातसुन जोतिषियोंने कहा· कि धरममूरत! आठ दिनमें इसका उत्तर देंगे तो भला, नहीं आपका नगर छोड़ देंगे· इतना कह बाहर आ, एकठौर पर बैठ, ये बिचार करते थे· कि किसी चौबेने इन्हें भावित देख पूछा, बाबाजू! आज कहाहै, जो तुम भावित हो रहे हो; इन्होंने सब वृत्तांत कह सुनाया; तब चौबे बोला, तुम मोकों लेचलो, याकोउत्तर हों देउंगो; इतनी बात इसके मुंहसे निकलतेही, वे हाथों हाथ चौबे को शाहज़ादे के पास ले गये, और कहा कि भौंचाल का वृत्तांत ये कहेंगे· शाहज़ादे ने कहा, अच्छा कहे, चौबे बोला, धर्ममूर्त! जा समें भगवानने सृष्टि रचवे की इच्छा करी, ता समें दो मनुष बनाये· और ऊपर सों नीचे नरकमें डार दये; तिन में एक मुंहके बल गिरयो, और दूसरो चूतड़के बल· मुंहके बलगिरन वारो मुसलमान भयो और दूसरो हिन्दू; एक की दृष्टि नीचे को रही, और दूसरे की ऊपर कों याहीतें जोतिषी आकाश की सब बात जानतु हैं· ग्रहन को होनो ये बतावेंगे; और जो चाल की बात जिनतें पूंछो, वे बतावेंगे· चौबे की यह जुबान सुन, शाहज़ादेने हंसकर कहा· इस

का प्रमान क्याहै; बोला· याही लिये भोर उठ मुसलमान मुंह धोवतुहै, और हिन्दू जंगल जातुहै, याको यही प्रमान है, इस अवसरकी बानी श्री निडरी से प्रसन्नहो, प्रगट जनेऊ देने चौबेको प्रसाद दिया, और जीतिधियोंको बहाल किया·

कहानी ९९

राजाकृष्णचंद्रके यहां गोपाल भांड रहा, वह बड़ाहंसोड़ और ठोल था· इसलिये राजा उस को प्यार करते, और जबतब उसके साथ चुहल किया करते, एक दिन राजा गंगा तीरहर धाममें गये; गोपालका घर वहां था; राजाका आना सुन, कुछ प्रसाद पानेकी आसपर आया एक छोटा लड़का छः सात महीने का गोद में लिये राजाके सोंही गया; देख तेही राजाने पूंछा, गोपाल! यह किसका लड़का है; बोला· महाराज! आपके दासका, राजाने हंसीसे कहा· यह लड़का कहने में तो तेरा है, पर देख इसमें मेरे अवयवके चिन्ह पाये जाते हैं· उत्तर दिया, हांमहाराज! सच्चहै· नराणां मातुलक्रमः; अर्थात नरनको मामूके लक्षनमिलते हैं· इस अवसर की बानीसे राजा बहुत प्रसन्नहुए; और वह कुछ प्रसाद ले चलागया·

कहानी १००

एक बूढ़ा बटोही ग्रीष्म कीऋतुमें तपनकी प्रचंड किर्नोसे निपटकष्ट पाकर लाठी टेकता चला जाता था· मारगमें एक जुवा अश्वारूढ़ आ निकला; बूढ़ेको देखकर उसे दयाहुई· बोला· अजी! मैं जुवापुरुषहूं, शीतघाम सब सहसक्ताहूं· तुम बूढ़ापनके कारन बहुत थके, अबइस घोड़े पर चढ़ो· मैं पीछे पीछे चला जाऊंगा उसकी इस करुणा बानी से मगनहो बूढ़ा उसके घोड़े पर चढ़ा, और जुवा पीछे पीछे पैदल जानेलगा· वह बहुत दूर न गया था· कि जुवाने पुकार कर कहा, कि अरे बूढ़े निर्लज्ज! घोड़े परसे उतर· क्या तूने अपना घोड़ा पायाहै जो सा-

रा दिन उस पर आरूढ़ चला जाता है; बूढ़ा लज्जित हो कर उतर पड़ा· और धीरे धीरे चलने लगा· थोड़ी दूर गया था, कि दूसरा कष्ट देख फिर उसके जीमें दया आई, और बहुत सी विनती कर उसे फिर घोड़े पर चढ़ाया· थोड़ी दूर जाते उसे फिर उसी भांति उतारा· निदान दो तीन बार उसे इस प्रकार चढ़ाने उतारनेसे बुढ़ने पूछा, बाबा! तुम्हारे पिता का नाम क्या; बोला, सैयद हब्बो· फिर उसने पूछा, तुम्हारी महतारी का नाम क्या; उसने कहा, बीबी ज़ीरा, पर वह कुलवंती नहीं, उसको व्याह करने से हमारे कुलमें कलंक लगा· यह सुनतेही बुढ़ने कहा हां बाबा! अबमैं समझा, कि चढ़ावें हब्बो और उतारें ज़ीरा; अब आप सिधारिये मैं गिरते पड़ते चला जाऊंगा;

इति

